

मार्च 2018

कीमत ₹ 15

दादावाणी



लोगों को जो नहीं भाता, वह अच्छा नहीं लगता और जो भाता है, वह अच्छा लगता है लेकिन बात एक ही है, दोनों संयोग ही हैं। पसंद-नापसंद में राग-द्वेष न हो, यही समता है।

पसंद

नापसंद



संपादक : डिम्पल मेहता

वर्ष : 13 अंक : 5

अखंड क्रमांक : 149

मार्च 2018

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,

अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

8155007500

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahaveideh Foundation

Simandhar City,

Adalaj - 382421,

Dist-Gandhinagar.

Owned by

Mahaveideh Foundation

Simandhar City,

Adalaj - 382421,

Dist-Gandhinagar.

Printed at

Amba Offset

B-99, GIDC, Sector-25,

Gandhinagar - 382025.

Published at

Mahaveideh Foundation

Simandhar City,

Adalaj - 382421,

Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल

भारत : 1500 रुपये

यू.एस.ए. : 150 डॉलर

यू.के. : 120 पाउन्ड

वार्षिक

भारत : 150 रुपये

यू.एस.ए. : 15 डॉलर

यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से

संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

पसंद-नापसंद में समता

संपादकीय

परम पूज्य दादा भगवान ने संसार की सभी वास्तविकताएँ बताते हुए कहा है कि इस संसार में शुद्धात्मा और संयोग दो ही चीजें हैं। 'शुद्धात्मा' शाश्वत है और संयोग विनाशी हैं, पर और पराधीन हैं। वे संयोग निरंतर बदलते ही रहते हैं लेकिन बुद्धि ने तो संयोगों को भी कितनी ही प्रकार से विभाजित कर दिया है। एक को जलेबी का संयोग अच्छा लगता है तो वह उसे अच्छा कहता है और दूसरे को अच्छा नहीं लगे तो वह खराब कहता है, इसमें अभिप्राय दे कर राग-द्वेष होते हैं इसीलिए तो यह संसार कायम है।

अब, हम महात्माओं को इन संयोगों का समभाव और समता भाव से निकाल करने का एक बहुत बड़ा पुरुषार्थ अभी बाकी है। पसंदीदा में तन्मयाकार हो जाते हैं और नापसंद में द्वेष में पड़ जाते हैं, दुःखी रहते हैं वे सारी कमियाँ हैं अभी। इसमें भूल कहाँ पर हो जाती है कि आम का रस अच्छा लगता है इसीलिए करेले का कड़वा स्वाद अच्छा नहीं लगता। अब, कड़वा स्वाद अच्छा लगने लगे, इस तरह भागाकार करके कड़वा रस भी लेते जाएँगे तो नॉर्मेलिटी आ जाएगी।

उसके लिए अभिप्राय बदलने हैं। चीजों को ग्रहण नहीं करना है न ही छोड़ने की झंझट में पड़ना है। अभिप्राय बदल जाएगा तो पसंद-नापसंद में भी समभाव रहेगा। अकुलाहट हो या मिठास लगे, हमें जागृति रख कर दोनों में समभाव रखना है। विषय, पाँच इन्द्रियों के सुख, मान, मनमानी, वर्चस्व, सत्ता में कहीं न कहीं सुख मानता है इसलिए अपमान व शरीर की वेदना कड़वी लगती है। धीरे-धीरे अभिप्रायों को बदलते जाएँगे कि 'चीजों या व्यक्तियों में नहीं बल्कि शुद्धात्मा में ही सुख है, यह तो कर्मों का हिसाब है। पूर्व काल में पुण्य कर्म बाँधा होगा तो मीठा मिलता है और पाप कर्म की वजह से कड़वा संयोग मिलता है।

नापसंद को अच्छे मन से सह लेंगे तो हमें समभाव रहा लेकिन चंदू को अभी समभाव नहीं रहता। अतः फर्स्ट स्टेप है, हमें समभाव रहा और सेकन्ड स्टेप, चंदू पर पसंद-नापसंद का कुछ भी असर नहीं होना चाहिए। नापसंद को अच्छे मन से सह लेने का मतलब है कि नापसंद व्यक्ति के लिए जरा सा भी अभाव, शिकायत या द्वेष नहीं होना चाहिए। उसे गुनाहगार के रूप में नहीं देखना चाहिए। जब नापसंद को साफ मन से सह लिया जाएगा अर्थात् मन से, बुद्धि से दखल नहीं होगी, वास्तव में तभी हमारी फाइल खत्म होगी।

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री ने, महात्माओं को ज्ञान में रह कर पसंद-नापसंद संयोगों में समता रखने के पुरुषार्थ की ओर इशारा किया है। अब इस ध्येय में जागृत रह कर पुरुषार्थ की शुरुआत करेंगे। समतापूर्वक फाइल खत्म करेंगे तो आगे जा कर स्पष्टवेदन और वीतरागता का स्टेशन अवश्य ही आ कर रहेगा यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

पसंद-नापसंद में समता

कर्म तो भुगतने ही होंगे

प्रश्नकर्ता : दादा! मैं सत्संग में आता हूँ, तो वह घर वालों को पसंद नहीं है। मैं उनके साथ कभी भी उल्टा व्यवहार नहीं करता, इसके बावजूद भी वे खुश क्यों नहीं होते?

दादाश्री : जब तक तुझे हिसाब भुगतना बाकी है, तब तक खुश कैसे होंगे?

प्रश्नकर्ता : खुश नहीं हों तब भी हर्ज नहीं है लेकिन अगर नॉर्मल रहेंगे तो भी मुझे अच्छा लगेगा।

दादाश्री : नॉर्मल रहेंगे ही नहीं। नॉर्मल न रहें फिर भी आपको ऐसा ही मानना है कि ‘खुश ही हैं’। उन्हें आप पसंद नहीं हो। ‘मेरे आचार-विचार उन्हें पसंद नहीं हैं’, ऐसा जानने के बावजूद भी आपको उनके साथ बैठ कर खाना पड़ता है, रहना पड़ता है, सोना पड़ता है, सहमत होना पड़ता है। क्या करें, चारा ही नहीं है न? वे कर्म भुगतने ही पड़ेंगे। जिस काल में, जिस क्षेत्र में, जिन द्रव्य-भाव के मिलने पर जो भुगतना है, उसमें तो किसी की चलेगी ही नहीं।

संयोग हैं मात्र दुःखदाई

संयोग दो तरह के हैं। प्रिय और अप्रिय। अप्रिय संयोग अधर्म का, पाप का फल है और प्रिय संयोग धर्म का, पुण्य का फल है और स्व-धर्म का फल मोक्ष है।

एक ही तरह के संयोग, एक को पसंद आते हैं और दूसरे को पसंद नहीं आते। प्रत्येक संयोग का ऐसा ही है। एक को पसंद आते हैं और दूसरे को पसंद नहीं आते। जो पसंदीदा संयोग जमा कर रखे हैं उनका कब वियोग होगा, इसका क्या ठिकाना? और फिर ऐसा है कि एक संयोग आता है और दूसरा आता है, उसके बाद तीसरा आता है लेकिन एक का वियोग हुए बगैर दूसरा संयोग नहीं आता।

संयोग मात्र दुःखदाई हैं, फिर चाहे पसंदीदा हों या नापसंद। पसंदीदा संयोगों का वियोग होना दुःख है और नापसंद संयोगों का आना भी दुःख है लेकिन नियम से तो दोनों का ही संयोग-वियोग, वियोग-संयोग ही है।

भगवान ने कहा है कि सुसंयोग है और कुसंयोग है। जबकि कुसंयोग के लिए लोग ऐसा कहते हैं कि इसकी बुद्धि बिगड़ी है। सिपाही आ कर पकड़ कर ले जाए तो वह कुसंयोग है और सत्संग में जाने मिले तो वह सुसंयोग। इस जगत् में संयोग का अर्थ है पूरण (भरना) और वियोग अर्थात् ग्लन (खाली करना), इसके सिवा और कुछ है ही नहीं।

मात्र ‘अ’ से ‘स’ ही करना है

प्रश्नकर्ता : नापसंद को पसंद कैसे करें?

दादाश्री : असुविधा का ‘अ’ निकाल कर

‘स’ रख दो, पसंद और नापसंद छूट जाएगा तो अंतराय टूट जाएंगे और फिर हमारे पास सभी अंतराय टूट जाते हैं न! उसके बाद तो भोग के अंतराय टूट जाते हैं और उपभोग के अंतराय भी टूट जाते हैं। खाना खाते समय लोग अच्छी चीजें परोस कर जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : पसंद-नापसंद छूट गया, इसलिये?

दादाश्री : नापसंद को पसंदीदा बनाया। ऐसा नहीं कि छूट गया लेकिन यदि नापसंद को पसंदीदा बनाएँगे, उसके बाद अंतराय टूटेंगे न!

संयोगों के साइन्स की समझ

प्रश्नकर्ता : पसंदीदा और नापसंद संयोग कौन लाता है?

दादाश्री : वह तो अपना ही लाइक-डिस्लाइक देखते हैं कि ‘हमें क्या अच्छा लगता है!’ जो अच्छा लगता है, उसी तरह के संयोग मिलते हैं। वही हमें जो अच्छे लगते हैं। जैसे कि यदि किसी को चोरी करना ही अच्छा लगता है तो चोर का संग मिल जाता है और आसपास वैसा ही फ्रेंड सर्कल भी मिल जाता है। अब जिसे चोरी करना अच्छा नहीं लगता, उसने इसे डिस्लाइक किया हो, यदि उसने चोरों के प्रति द्वेष किया हो, तब भी वे उसे मिल जाते हैं। ये सारे संयोग राग-द्वेष करने की वजह से मिलते हैं। राग-द्वेष नहीं करोगे तो कोई भी संयोग नहीं मिलेंगे। हमें ऐसे संयोग नहीं मिलते हैं। हमें राग-द्वेष नहीं हैं न! हमें कोई धौल मारे तब भी उनके प्रति द्वेष नहीं होता। हम उसे आशीर्वाद देते हैं। अतः यह सब राग-द्वेष से होता है। यह ज्ञान मिलने के बाद राग-द्वेष नहीं होते। राग-द्वेष काँजेज हैं और उनके इफेक्ट के रूप में संयोग मिलते हैं।

ये जो संयोग मिलते हैं, वे सब आपके पिछले जन्म के काँजेज हैं, उन्हीं का यह परिणाम है। पिछले जन्म में जो काँजेज इकट्ठे किए, उन काँजेज के आधार पर आपको माता-पिता का संयोग मिलता है। अच्छे माता-पिता मिलते हैं, भाई भी अच्छे मिलते हैं। वर्ना झगड़ालू माँ-बाप मिलेंगे। चोर माँ-बाप भी मिल सकते हैं। अतः आपको काँजेज अच्छे ही करने चाहिए ताकि आपको सारे संयोग ऑलराइट (ठीक) मिलें और वहाँ जाने से पहले गाड़ी वगैरह सब मिल जाए, ऐसा होना चाहिए। यहाँ इन्डिया में ऐसे संयोग ले कर आए हैं कि गाड़ी तो नहीं मिलती लेकिन पैरों के लिए बूट भी नहीं मिलते।

ऐसे संयोग किस वजह से मिलते हैं? तो कहा कि, ‘यदि आप दुनिया को सुख दोगे, मनुष्य को, जीवमात्र को, तो सारे संयोग अच्छे मिलेंगे। दुःख दोगे तो संयोग बिगड़ेंगे।’ अतः भगवान को इससे कोई लेना-देना नहीं है। यह आपका ही क्रिएशन है और वह आपका ही प्रोजेक्शन है।

छोटे बच्चे को कड़वी दवाई पिलाने पर वह क्या करता है? मुँह बिगाड़ता है न! और मीठी चीज खिलाएँ तो? खुश होता है। इस जगत् में प्रत्येक जीव जो राग-द्वेष करता है, वे सभी काँजेज हैं और उनमें से ये कर्म उत्पन्न हुए हैं। वे जो खुद को पसंद हैं और वे जो नहीं पसंद हैं, दोनों ही कर्म आते हैं। नापसंद कष्ट पहुँचा कर जाते हैं यानी कि दुःख दे कर जाते हैं और पसंदीदा सुख दे कर जाते हैं। यानी कि जो काँजेज पिछले जन्म में डले हैं, वे इस जन्म में फल देते हैं।

पसंदीदा में तन्मयाकार होने पर डलते हैं बीज

हम ने जो भाव पिछले जन्म में किए थे न उसी कारण यह जो अहंकार है न, वह खुद की पसंदीदा बात आने पर मन में तन्मयाकार हो

जाता है और जब नापसंद बात हो, तब क्या वह तन्मयाकार होता है ?

प्रश्नकर्ता : नापसंद हो तब तो बल्कि विरोध करता है।

दादाश्री : हाँ, वहाँ पर एकाकार नहीं होता और फिर कहता है 'मुझे अनचाहे विचार आ रहे हैं।' अतः जब अनचाहे विचार आते हैं तब वह अलग रहता है। उतने समय तक अनचाहे विचारों में अलग रहता है। जबकि मनचाहे विचारों में तू फँस जाएगा। जब पसंदीदा संयोग आते हैं तो उनमें तन्मयाकार हो जाता है, उस समय कर्म का बीज डलता है। उसे अवस्थित कहते हैं। मन की अवस्था में 'खुद' अवस्थित हो गया और 'व्यवस्थित' उसका यह फल देता है। वहाँ से फिर 'व्यवस्थित' के ताबे में, 'कम्प्यूटर' के ताबे में चला जाता है। अतः फिर कम्प्यूटर फल देता है।

पसंद-नापसंद में से राग-द्वेष

पसंद और नापसंद, ये दो भाग हैं। पसंद यानी ठंडक और नापसंद यानी अकुलाहट? यह मनचाहा यदि अधिक हो जाए तो वह वापस नापसंद हो जाता है। आपको जलेबी खूब भाती हो और आपको आठ दिन तक रात-दिन रोज जलेबी ही खिलाते रहें तो आपको क्या होगा ?

प्रश्नकर्ता : तो फिर वह अच्छी नहीं लगेगी, ऊब जाएँगे उससे।

दादाश्री : पसंद-नापसंद यदि एक्सेस हो जाएँ तो वे राग-द्वेष में परिणामित होते हैं और वे यदि सहज ही रहें तो कुछ बाधक नहीं होगा। क्योंकि पसंद-नापसंद तो नोकर्म हैं, हल्के कर्म हैं, गाढ़ नहीं। उनसे किसी को नुकसान नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : दादा, पसंद-नापसंद ही राग-द्वेष हैं न ?

दादाश्री : नहीं, उसे राग-द्वेष नहीं कहते। पसंद और नापसंद तो ज्ञानीपुरुष को भी रहते हैं। ये 'ज्ञानीपुरुष' भी, यदि यहाँ पर गद्दी हो और पास में चटाई हो तो वे गद्दी पर बैठेंगे क्योंकि विवेक है और वह सभी को मान्य है। यदि कोई कहे कि यहाँ से उठ कर वहाँ बैठिए तो हम वैसा भी करेंगे। हमें भी पसंद-नापसंद रहता है। आप हमें यहाँ से उठा कर नीचे बिठाओ तो हम वहाँ लाइक करके बैठ जाएँगे, हमें लाइक-डिस्लाइक के थोड़े बहुत पूर्व पर्याय हैं (भरा हुआ माल)। बाकी, आत्मा को ऐसा नहीं है। पसंद-नापसंद वह चेतनता का फल नहीं है।

पसंद-नापसंद की विशेष समझ

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि ज्ञानी को भी पसंद-नापसंद रहते हैं। वह किस प्रकार से ?

दादाश्री : अभी अगर मैं वहाँ जाऊँ, आपके यहाँ, तो आपने जहाँ मेरे लिए बैठने की जगह बनाई होगी, मैं वहाँ पर बैठ जाऊँगा लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह हमें पसंद है। मूलतः वहीं पर अच्छा लगता है हमें। और फिर यदि कोई कहे कि यहाँ नहीं बैठना है तो हमें कोई दिक्कत नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो वह उन संयोगों में वीतराग रहने के समान है।

दादाश्री : उसे लाइक-डिस्लाइक कहते हैं। उसे राग-द्वेष नहीं कहते। लाइक-डिस्लाइक।

प्रश्नकर्ता : ठीक है दादा लेकिन जो पसंद-नापसंद, जिनमें थोड़ा तन्मयाकारपन रहता है।

दादाश्री : पसंद-नापसंद विवेक के कारण है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, जब तक विवेक के कारण है तब तक ठीक है और तब तक राग-द्वेष नहीं हैं

लेकिन पसंद-नापसंदगी में जो थोड़ा तन्मयाकारण हो जाता है!

दादाश्री : हो जाता है। तन्मयाकारण हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : अतः वहाँ पर चाहे मंद लेकिन राग-द्वेष तो हुए न?

दादाश्री : वहाँ राग-द्वेष शब्द है ही नहीं। राग-द्वेष कब कहलाते हैं जब मूल रूप से वापस यही डिसिज़न आ जाए कि, 'मैं खुद चंदूभाई ही हूँ' और 'वही हूँ', और आज्ञा का पालन नहीं करे तब वे राग-द्वेष कहलाएँगे। राग-द्वेष खुद ही कर्म कहलाते हैं। इन्हें (ज्ञान प्राप्त महात्माओं को) कर्मबंधन नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : चाहे कैसे भी राग-द्वेष हैं, ऐसा दिखाई तो देता है, लेकिन वे जीवंत नहीं हैं, वह अजीव भाग है। अज्ञानी के राग-द्वेष और इनके (महात्माओं के) राग-द्वेष में कोई फर्क नहीं है ऐसा लगता है लेकिन यह अजीव भाग है।

प्रश्नकर्ता : तो दादा, पसंद-नापसंद और राग-द्वेष में क्या अंतर है?

दादाश्री : पसंद-नापसंद तो रति-अरति जैसी बात है, लाइक एन्ड डिस्लाइक जैसा।

प्रश्नकर्ता : जब लाइक हो तब राग है तब लाइकिंग है न?

दादाश्री : वह तो है ही। लाइक-डिस्लाइक हो तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन राग का मतलब क्या है? पसंदीदा चीज़ में आत्मा एकाकार हो जाए तो वह राग कहलाएगा और आत्मा एकाकार न हो तो वह राग नहीं कहलाएगा। नापसंद हो लेकिन अगर आत्मा उसमें एकाकार हो जाए तो

वह द्वेष कहलाएगा और नापसंद हो लेकिन आत्मा एकाकार नहीं हो और सिर्फ उसे जाने तो वह द्वेष नहीं कहलाएगा। इस पसंद-नापसंद को भगवान ने राग-द्वेष नहीं कहा है। रति-अरति कहा है। ये रति-अरति तो नोकषाय हैं, उसमें हर्ज नहीं है। 'राग-द्वेष से परेशानी हैं,' भगवान ने ऐसा कहा है।

संयोगों का विज्ञान

जगत् में 'शुद्धात्मा' और 'संयोग,' दो ही चीज़ें हैं। बाहर जो मिलते हैं, वे संयोग हैं। हवा ठंडी लगे या विचार आएँ तो वे संयोग हैं लेकिन बुद्धि से ऐसा दिखाई देता है कि 'यह खराब है और यह अच्छा है' और उनके प्रति राग-द्वेष करता रहता है। ज्ञान क्या कहता है कि, 'दोनों संयोग एक जैसे ही हैं। संयोगों से तू खुद मुक्त ही है, तो फिर दखल क्यों करता है? ये संयोग, तुझे, खुद को क्या कर लेंगे?' ये तो संयोग हैं, वे कुछ भी नहीं करेंगे लेकिन बुद्धि दखल करवाती है। बुद्धि तो संसार का काम करके देती है।

इस बुद्धि ने तो तरह-तरह के संयोगों का भेदांकन कर दिया है। कोई कहेगा कि यह 'अच्छा है', जबकि कोई कहेगा कि, 'यह खराब है!' एक को जलेबी का संयोग पसंद है तो वह उसे अच्छा कहता है और दूसरे को वह नापसंद हो तो वह उसे खराब कहता है। उसमें वापस अभिप्राय देता है कि, 'यह अच्छा और यह खराब'। उससे फिर राग-द्वेष हो जाते हैं। उसी से तो संसार कायम है। एक छोटे बच्चे को हम ने एक हीरा और काँच दिए हों तो वह काँच रख लेता है और बाप हीरा ले लेता है क्योंकि बाप बुद्धि से हीरा ले लेता है। बुद्धि से तो संसार का फल मिले, ऐसा है।

लोगों को जो नहीं भाता, वह पसंद नहीं है और जो भाता है वह पसंद है लेकिन एक ही बात है, दोनों संयोग ही हैं। यह तो एक को

अनुकूल, इष्ट संयोग और दूसरे को प्रतिकूल, अनिष्ट संयोग माना, फिर कोई अनिष्ट संयोग आ जाए तो कहेगा, 'यह कहाँ चाय पीने आ गया?' और इष्ट संयोग आ जाए, तब उसे नहीं पीनी हो फिर भी जबरन उसे चाय पिलाता है। इसके पीछे रूट कॉज़ क्या है? 'यह अच्छा और यह खराब है' ऐसा कहते हैं, वह? नहीं, लेकिन वह मिथ्यात्व दृष्टि है इसलिए ऐसा करता है। मिथ्यात्व दृष्टि के कारण सही क्या और गलत क्या उसका भान ही नहीं है।

कुछ लोगों को दिन में अनुकूल आता है और रात को अनुकूल नहीं आता लेकिन ये दोनों संयोग रिलेटिव हैं। रात है तो दिन की कीमत है और दिन है तो रात की कीमत है!

वीतराग भगवान क्या कहते हैं कि, 'ये सभी संयोग ही हैं और दूसरा, आत्मा है, उसके सिवा तीसरा कुछ भी नहीं।' उनके लिए सही-गलत, अच्छा-बुरा कुछ भी नहीं होता। 'व्यवस्थित' क्या कहता है कि, 'इन संयोगों में तो किसी का किंचित्मात्र भी नहीं चल सकता, सारा पिछले खाते का हिसाब मात्र ही है।' वीतरागों ने क्या कहा है कि, 'सारे संयोग एक समान ही हैं। देने आया या लेने आया, सभी एक ही हैं,' लेकिन यहाँ पर बुद्धि दखल करती है। संयोगों के मात्र ज्ञाता-दृष्टा ही रहने जैसा है। फिर ये संयोग वियोगी स्वभाव के हैं। जब इकट्ठे होने के संयोग खत्म हो जाते हैं, तब बिखर जाते हैं। तब जो एक मन (40 सेर) का था, वह फिर 38 सेर का हो जाता है, फिर 36 सेर का हो जाता है, फिर क्रमशः वह खत्म हो जाता है।

पराधीन चीज़ों में हाथ डालने से क्या मतलब

संयोग पर और पराधीन हैं इसलिए वे आपसे बदले नहीं जा सकेंगे, एक भी संयोग। वे

आपसे अलग हैं, वे आपकी जाति के नहीं हैं, न ही आपके जाति वाले हैं। पर और पराधीन हैं इसलिए आपसे बदले नहीं जा सकेंगे। बल्कि वे आपको घुमा देंगे, अतः उनकी तरफ दुर्लक्ष रखो, ऐसा कहना चाहते हैं। वे अपने आप आएँगे और चले जाएँगे, समय होने पर चले जाएँगे।

वह संयोग टाइम और मुद्दत सब कुछ ले कर आता है, तो हमें कहना है कि 'धीरज रखना न!' क्या धीरज नहीं रखेंगे हम यह जानने के बाद? और वह उससे कोई हेल्प नहीं होगी। हम उसके नाम की माला करते रहें कि, 'कब जाएगा, कब जाएगा, कब जाएगा,' तो क्या उससे इंसान को कोई हेल्प होगी? हर मनुष्य का स्वभाव ऐसा होता है कि यदि कोई नापसंद चीज़ या व्यक्ति आए तो उसके मन में ऐसा रहता ही है कि 'कब जाए?' नहीं रहता उसे कि 'यह यहाँ से कब टले?' इस तरह तो वह टलेगा ही नहीं न? उसकी बजाय अपना दादा का विज्ञान क्या गलत है कि, 'भाई! यह पर और पराधीन है। भले ही वे सोते रहें उनके अपने रूम में।' हमें अपना कार्य करते रहना है। समय आने पर अपने आप चला जाएगा। इसलिए हम ने लिखा है 'पर और पराधीन' तो उसमें कहाँ हाथ डाल रहे हो? यदि पराधीन चीज़ स्वाधीन हो तो बदल भी सकते हैं लेकिन इस पराधीन चीज़ में हाथ डालने का क्या मतलब है? वह अपने आप ही उठ कर चला जाएगा।

अजागृति रोकती है स्वभाव-सुख को

प्रश्नकर्ता : दादा! वह पर और पराधीन है, इस बारे में यदि महात्माओं को जागृति न रहे तो क्या उसे हम चार्जिंग कहेंगे?

दादाश्री : नहीं, चार्जिंग नहीं। जो हमारी आज्ञा का पालन करता है, उसके लिए वह चार्जिंग

कहलाएगा ही नहीं लेकिन यदि जागृति नहीं रही तो आपको उतनी ही पीड़ा होगी। अतः वह जो सुख आ रहा था, वह रुक जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् डिस्चार्जिंग रुक जाएगा ?

दादाश्री : नहीं, वह डिस्चार्ज तो हो गया, लेकिन आपको मिलने वाला सुख रुक गया। एक व्यक्ति ऐसा तय करे कि 'भाई यह संयोग तो स्वभाव से वियोगी ही हैं अतः हमें उसमें दखलंदाजी करने की ज़रूरत नहीं है,' तो खुद के स्वभाव का सुख आता रहेगा लेकिन यदि उसके नाम की माला जपना शुरू कर दे कि 'यह कब जाएगा? कब जाएगा,' तो वह सुख आना बंद हो जाएगा। अतः आपका उतना सुख आना बंद हो जाएगा और बल्कि आपका समय बिगड़ेगा। अतः बखेड़ा करने की ज़रूरत ही कहाँ है इसमें ?

प्रश्नकर्ता : दादा, इसमें दो बातें हैं। एक तो आप ऐसा कह रहे हैं कि यदि गलन में जागृति रखी जाए तो एक-दो जन्मों में काम हो जाएगा और यदि जागृति नहीं रखेंगे तो और अधिक जन्म होंगे।

दादाश्री : तो दो-चार जन्म होंगे। इस जागृति का नियम ऐसा है कि इस जन्म में शायद पिछले जन्मों के कारणों की वजह से (कर्मों का) ज़रा जोर रहे हो तो बहुत जागृति नहीं रह पाए लेकिन जिसे इस जन्म में जागृति हो चुकी है और जिसे यह ज्ञान मिल गया है, अगले जन्म में तो वह भभक उठेगा, लाइट हो जाएगी, एक ही जन्म में लेकिन वह पाँच आज्ञा का पालन करता हो तो।

प्रश्नकर्ता : पाँच आज्ञा पालन करने की जागृति अगर मंद पड़ जाए तो फिर गलन रुक जाएगा न ?

दादाश्री : गलन तो रुकेगा ही नहीं। गलन

तो, यह आयुष्य कर्म पूर्ण होने तक सारा गलन हो जाता है अपने आप ही और यदि गलन रुक गया न तो बल्कि आयु बढ़ेगी ही लेकिन गलन रुकता ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उस गलन की गति कम हो जाएगी ?

दादाश्री : गलन की गति कम हो जाएगी, कम-ज्यादा होगी लेकिन गलन रुकेगा नहीं। गलन तो हो ही जाएगा लेकिन जागृति नहीं रहने की वजह से हम तक सुख नहीं पहुँचने देगा वह। वह सब से बड़ा नुकसान है। हम तक जो सुख आ रहा हो, उसे आने नहीं देता। अभी 'हम' यह जो मुक्त मन का सुख भोग रहे हैं, वैसा ही सुख आपको भी मिलेगा। ऐसा सुख है लेकिन यह आप तक उसे आने नहीं देगा क्योंकि अनादि से जो उल्टा अभ्यास है न, वह अभ्यास हावी हो जाता है।

ज्ञान से निबेड़ा तो लाना ही पड़ेगा

प्रश्नकर्ता : दादा। सूक्ष्म में अभी भी मन में कड़वाहट और मिठास रहा करती है तो इस ज्ञान के बाद जो कड़वा और मीठा रहता है, वास्तव में वह क्या है ?

दादाश्री : वह सब तो निकल जाएगा अपना। क्योंकि वह निकाली है। है तो निकाली लेकिन यदि वह वहाँ पर चिपका रहता है तो वह रहा तो साथ में ही न!

प्रश्नकर्ता : अतः उसमें उसका पूरा निकाल (निपटारा) नहीं हुआ।

दादाश्री : निकाल नहीं हुआ। कभी न कभी तो आपको निकाल करना ही पड़ेगा न।

प्रश्नकर्ता : और जो भी संयोग मिलते हैं

वे, ये कड़वे-मीठे फल देने के लिए अथवा उस कड़वी-मीठी निर्जरा होने के लिए मिलते हैं?

दादाश्री : हाँ, निर्जरा होने के लिए ही तो आए हैं, निर्जरा तो होनी ही है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि कड़वे-मीठे की निर्जरा तो होनी ही है।

दादाश्री : वह निर्जरा तो होगी ही। हर एक कर्म की निर्जरा हो ही जाएगी लेकिन कोई बीज डाल कर जाता है। और पूरी निर्जरा तब कहलाएगी जब बीज न डाले।

प्रश्नकर्ता : तो उसमें नए बीज डल जाते हैं या अगर नया नहीं डालना है तो उसके लिए बीच में कैसा पुरुषार्थ होना चाहिए?

दादाश्री : उसके लिए तो जागृति की जरूरत है, सभी का *निकाल* करना आना चाहिए। जागृति रहनी चाहिए और खुद को उनमें रुचि नहीं होनी चाहिए। रुचि होगी तो *निकाल* नहीं कर पाएगा।

प्रश्नकर्ता : अतः इसमें ऐसा होता है न कि जब संयोग मिलते हैं, उस समय उसे खुद को कड़वाहट और मिठास महसूस होती है तो उस क्षण ज्ञान से उसका *निकाल* लाना चाहिए न? तो अंदर उस *निकाल* की पद्धति में क्या होता है? एक तरफ तय किया होता है कि हमें मोक्ष में ही जाना है और इस संसार प्रसंग में से छूटना ही है।

दादाश्री : यदि उसमें रुचि नहीं होगी तब। रुचि नहीं होगी तो कर्म की निर्जरा हो जाएगी और यदि ज्ञान हाज़िर रहेगा तो बीज नहीं डलेंगे।

प्रश्नकर्ता : इस ज्ञान की प्राप्ति के बाद भी यदि उसे ऐसी रुचि रह जाए तो क्या बीज डलेंगे?

दादाश्री : तो बीज नहीं डलेंगे लेकिन

उसकी वह फाइल, वैसी ही बाकी रहेगी, हल हुए बिना। अतः कभी न कभी तो हल तो लाना ही पड़ेगा न!

रुचि-अरुचि में समता रहे तो ठीक है

प्रश्नकर्ता : अब, क्या ऐसा कोई नियम है कि ये जो रुचि वाली फाइलें हैं, वे फिर उसे अरुचि करवा कर ही छूटेगी?

दादाश्री : अरुचि नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो क्या होता है?

दादाश्री : रुचि अर्थात् ज्ञान से छूट जाता है। अरुचि रखने पर वापस द्वेष होगा।

प्रश्नकर्ता : अरुचि रखने का मतलब यह नहीं है कि रुचि वाले निमित्त पर अरुचि रखी जाए लेकिन रुचि वाला निमित्त, उसे कभी न कभी अरुचि करवाएगा ही?

दादाश्री : वह तो करवाए बगैर रहेगा ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : तो फिर उस समय उसका *निकाल* हो जाएगा, ऐसा?

दादाश्री : उस क्षण यदि समता रखे, तब न! हर रुचिकर संयोग अरुचि करवाए बगैर रहेगा ही नहीं और उस समय समता रहे तो ठीक है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या ऐसा नियम है कि जिस निमित्त के प्रति अरुचि होती है इसीलिए उसके प्रति रुचि होती है? ऐसा है क्या?

दादाश्री : नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो क्या रुचि के उन परिणाम स्वरूप ही अरुचि होती है?

दादाश्री : रुचि के उन परिणामों में जब

बाहर से झटके लगते हैं तब अरुचि होती है कि अरे! कहाँ आ फँसे?

प्रश्नकर्ता : वह क्या कहा?

दादाश्री : जहाँ रुचि रखते हैं, वहाँ मार पड़ती है और इसलिए फिर अपने आप ही अरुचि हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : 'मार पड़ती है' का मतलब? वह रुचि वाला निमित्त ही उसे दुःख देता है?

दादाश्री : निमित्त दुःख दिए बगैर रहेगा ही नहीं। जहाँ पर रुचि है वहाँ से दुःख मिलेगा ही।

प्रश्नकर्ता : यानी वही निमित्त उसे दुःख देता है।

दादाश्री : वही निमित्त, दुःख ही देता है। हमेशा जिस पर रुचि रहती है, वह निमित्त दुःख देने के लिए ही आता है। कुछ दिनों तक नहीं देता लेकिन आखिर में दुःख देता ही है और जब दुःख देता है तब फिर अरुचि हो जाती है। फिर यह छूटने का प्रयत्न करता है लेकिन तब तक उसके कितने धागे बंध चुके होंगे, उसका क्या पता चले? कितनी बार लपेटा होगा उसका क्या पता चले? फिर मुक्त होना चाहता है, समता रखता है लेकिन कुछ हो नहीं पाता।

समता भाव आता है ज्ञान से

प्रश्नकर्ता : दादा, वह समता किस प्रकार से आएगी?

दादाश्री : विषमता किस तरह से आएगी? क्या विषमता खरीद कर लाए थे?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो चल ही रहा है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन वह किस तरह से लाए? क्या उसके लिए मेहनत करनी पड़ी थी आपको?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो फिर समता के लिए भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। 'यहाँ' आपको समता आ जाएगी।

वह समता किस तरह से आएगी? किसी के यहाँ चाय न पीए, (किसी का अहसान न ले) किसी पर गुस्सा न करे, इस प्रकार से जो हर काम का हल लाए, उस व्यक्ति में समता आ जाती है। समता और किस तरह की? यह क्या धर्म की कोर्ट है कि इक्विलिब्रियम (संतुलन) हो जाएगा?

यदि चंदूभाई इन पर गुस्सा हो जाएँ और जब चंदूभाई गुस्सा कर रहे हों और तब उसे 'वह खुद' देखे तो उसे कहते हैं समता।

प्रश्नकर्ता : समता क्या मन की स्थिति है?

दादाश्री : मन की स्थिति है लेकिन मन की ऐसी स्थिति कब रहेगी? भीतर जागृति हो, ज्ञान हो, तभी वह रहेगी। नहीं तो, मन हमेशा ही इस ओर या उस ओर झुका हुआ ही रहता है। समता कब रहती है? आत्मा प्राप्त हो जाए तब। जब तक 'मैं चंदूभाई हूँ', तब तक विषमता हुए बगैर रहेगी ही नहीं और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' उसका भान हुआ तो काम हो गया।

समता है द्वंद से परे

व्यवहार में लोग सहनशीलता को 'समता' कहते हैं! लेकिन समता बहुत बड़ी चीज़ है। घर पर पत्नी कुछ कहे और सुन ले तो, उसे लोग 'समता' कहते हैं लेकिन वह समता नहीं कहलाती। भीतर अजंपा (अशांति) होता रहता है तो उसे समता कैसे कहा जाए?

समता तो किसे कहते हैं कि फूल चढ़ाएँ तो उस पर राग नहीं या कोई गालियाँ दे तो उस

पर द्वेष नहीं, बल्कि उन्हें आशीर्वाद देते हैं उसे समता कहते हैं। शुभ हो या अशुभ, दोनों को समान मानता है। शुभाशुभ में राग-द्वेष नहीं, उसे समता कहते हैं। जिसमें द्वंद्व नहीं है उसी को समता कहते हैं। इस प्रकार से समान तो वीतराग ही मान सकते हैं।

प्राप्त संयोगों में समता रख कर करो निकाल

प्राप्त संयोगों के अलावा संसार में कोई चीज़ नहीं है। 'प्राप्त संयोगों' का सुमेल सहित समता भाव से *निकाल* करो।' यह गज़ब का कथन निकला है। इस एक ही कथन में, जगत् के तमाम शास्त्रों का ज्ञान सार रूप से समा गया है। हम प्राप्त संयोगों के ज्ञाता-दृष्टा हैं, अप्राप्त के नहीं।

अब, प्राप्त संयोगों का मतलब क्या है? जिसके साथ सेट नहीं होता है यदि वह व्यक्ति सामने आ जाए तो अब वहाँ पर उसे यह वाक्य याद रहेगा तो निबेड़ा आ जाएगा।

ग्यारह बजे कोर्ट में जाना हो और ग्यारह बजे भोजन की थाली आ जाए तो उस समय, वह संयोग प्राप्त हुआ कहलाता है। पहले उसका, सुमेल रखते हुए समभाव से *निकाल* करना पड़ेगा इसलिए शांति से भोजन कर लेना है। दो हाथों से थोड़े ही खा सकते हैं? शांति से भोजन करना अर्थात् उस समय चित्त कोर्ट में नहीं जाना चाहिए। शरीर यहाँ खाता है और आप कोर्ट में रहते हो। पहले शांति से भोजन करना और बाद में आराम से कोर्ट जाना। लोग क्या करते हैं कि प्राप्त संयोग को भोग ही नहीं सकते और अधीर हो कर अप्राप्त के पीछे पड़ जाते हैं। अतः दोनों को गँवा देते हैं। अरे भाई, भोजन प्राप्त हुआ है तो सुमेल सहित उसे भोग, तभी उसका *निकाल* होगा। कोर्ट तो अभी दूर है, अप्राप्त है। उसके पीछे क्यों पड़ा है? संयोगानुसार काम निकाल लेना है।

संयोग प्रारब्ध हैं और समता पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : दादा, ये जो प्राप्त संयोग हैं, वे प्रारब्ध कहलाते हैं?

दादाश्री : हाँ, सब प्रारब्ध है।

प्रश्नकर्ता : और समता भाव से *निकाल* करना पुरुषार्थ है?

दादाश्री : वह पुरुषार्थ कहलाता है, वह सब से बड़ा पुरुषार्थ है। (ज्ञान नहीं लिया हो उनके लिए) भले ही भ्रांति रही लेकिन वह (भ्रांतिमय) पुरुषार्थ बहुत बड़ा है। वह मोक्ष की तरफ ले जाएगा। हाँ, मोक्ष के संयोग मिलवा देगा।

संयोग मिले वह प्रारब्ध और संयोग उल्टा आए, उस घड़ी समता रखनी, वह पुरुषार्थ है। जो संयोग मिलते हैं, वे सभी प्रारब्ध हैं। आप 'फर्स्ट क्लास' पास हुए, वह भी प्रारब्ध और कोई फर्स्ट क्लास नापास हुआ, वह भी प्रारब्ध। इन शब्दों पर से नोट करना है कि जितने संयोग मिलते हैं वे सारे ही प्रारब्ध हैं। सुबह में उठा गया, वह संयोग कहलाता है। साढ़े सात बजे उठा गया तो साढ़े सात का संयोग कहलाता है, वह प्रारब्ध कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : एक व्यक्ति मेरे लिए खराब बोले, मेरे सामने ही बोले और मैं उसके लिए समभाव रख कर पुरुषार्थ करूँ तो वह वास्तव में प्रारब्ध कहलाएगा या नहीं?

दादाश्री : हम लोगों को जो संयोग मिलता है वह गलत हो, कोई हमें गालियाँ दे, वहाँ लोग पुरुषार्थ नहीं करते और सामने वाले को गाली दे हैं, मुँह चढ़ाते हैं ऐसा करते हैं। कोई आपको गालियाँ दे, उस समय आपको मन में ऐसा रहे कि यह मेरे ही कर्मों का फल है, सामने वाला तो निमित्त है, निर्दोष है। वह भगवान का आज्ञा

रूपी पुरुषार्थ है। उस घड़ी आप समता रखो, वह पुरुषार्थ है।

प्रारब्ध और पुरुषार्थ में तो लोग बस इतना ही जानते हैं कि, 'मुझे बस ग्यारह बजे जाना है, क्यों देर हो गई? इस तरह कढ़ी क्यों गिरा दी? ऐसा किया और वैसा किया?' अरे, कढ़ी गिर गई तो वह संयोग कहलाता है। इससे दो भाग अलग हुए कि संयोग और वियोग दो ही हैं संसार में। जितने संयोग हैं, उतने वियोग होंगे ही और संयोग जो हुआ, उसमें समता रखे वह पुरुषार्थ। कोई फूल चढ़ाएँ तब ऐसे छाती फुलाए तो वह पुरुषार्थ नहीं कहलाता। स्वाभाविक रूप से जो कुछ भी होता है, वह प्रारब्ध है। फूल चढ़ाएँ, तब हम ऐसे पद्धतिपूर्वक रहें, वैसा पुरुषार्थ पहले कभी हुआ था?

यह 'व्यवस्थित' का ज्ञान तो सब लोगों के लिए नहीं है। क्योंकि उनके पास अहंकार है न! अब अहंकार 'व्यवस्थित' के ताबे में है और वह खुद कहता है कि, 'मैं कर रहा हूँ,' इसलिए उन दोनों का वहाँ पर टकराव होता है। 'व्यवस्थित' में भी दखल करके बल्कि सुख बिगाड़ता है। वह अहंकार से यदि इतना दखल नहीं करता हो और समता से यदि पुरुषार्थ करता हो तो बहुत लाभदायक हो जाता है। फिर भी 'उससे' 'व्यवस्थित' तो माना ही नहीं जाता। 'व्यवस्थित' तो शुद्ध होने के बाद, 'आत्मा' प्राप्त होने के बाद ही समझ में आता है!

विषमता के सागर में समता, वही है ज्ञान

अन्य किसी भी चीज़ के लिए मेहनत-मजदूरी करने योग्य है ही नहीं। अभी तक जो कुछ भी किया है, वह तो चीख-चिल्लाकर रोने जैसा किया है! बच्चों को चोरी करना कौन सिखाता है? यह सब बीज में ही रहा हुआ है।

नीम का पत्ता-पत्ता कड़वा क्यों हैं? उसके बीज में ही कड़वाहट रही हुई है। सिर्फ ये मनुष्य ही दुःखी हैं लेकिन इसमें उनका दोष नहीं है क्योंकि चौथे आरे तक सुख था जबकि यह तो पाँचवा आरा है। इस आरे का नाम ही है दूषमकाल! काल का नाम ही दूषम! फिर सुषम ढूँढने जाएँ तो वह भूल ही है न!

अर्थात् मुश्किलें तो आती ही रहेंगी। मुश्किलों के बगैर तो यह टाइम बीते ऐसा नहीं है, इसी का नाम है दूषमकाल! महादुःखपूर्वक समता रहे, ऐसा यह काल है, यानी नब्बे प्रतिशत विषमता ही रहती है। उसमें थोड़ी बहुत समता रखनी, वह क्या कोई ऐसी-वैसी बात है? विषम परिस्थिति में समता रहे, उसी को 'ज्ञान' कहते हैं। अभी तो यह विषमता का सागर है।

प्रश्नकर्ता : उसमें थोड़ी बहुत समता रह जाए, वह आश्चर्य है!

दादाश्री : हाँ, वह आश्चर्य है और वैसी समता रहे तो उसका आनंद हमें स्पष्ट पता चलेगा।

बाकी, इस दुनिया में कोई चीज़ आपको परेशान नहीं कर सकती और जो परेशान करती है, वही आपका हिसाब है इसलिए हिसाब चुका देना। और यदि (कुत्ता) काटने पर आप मन में जो भाव करते हो कि 'इस कुत्ते को तो मार ही डालना चाहिए, ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए।' तब फिर नया हिसाब शुरू किया। चाहे कैसी भी परिस्थिति हो, उसमें समता रख कर हल लाओ, अंदर ज़रा सी भी विषमता नहीं होनी चाहिए!

किसी भी परिस्थिति में समता ही है अंतर तप

एक महीने पहले ही लाख रुपए जमा करवाए हों और 'वह पार्टी डूब गई,' यह सुनते ही अदीठ (न दिखाई दे ऐसा) तप शुरू हो जाता

है आपको। आपको उस समय तप कर लेना है। आप तप करें और बिल्कुल समता रखें और यदि उसके लिए खराब विचार आएँ तो उनका प्रतिक्रमण करें तो इसका मतलब आपने क्लियर (शुद्ध) रखा। उस क्लियरेन्स (शुद्धता) का उस पर असर होगा।

प्रश्नकर्ता : तप यानी क्या? अंदर घर्षण होता है?

दादाश्री : नहीं! अंदर अर्जपा होता है और अकुलाहट होती है। बाहर कुछ नहीं कहते लेकिन अंदर अकुलाहट हो जाती है। वह तप सहन करना पड़ेगा। बाहर तो फाइलों का निकाल करते हैं समभाव से लेकिन अंदर जो अकुलाहट हो जाती है, उसे सहन किया और सामने वाले व्यक्ति को दुःख दिए बिना शांति से सहन किया तो, वह तप कहलाएगा। उसे 'अदीठ तप' कहा गया है।

महात्मा लगभग पाँच ही प्रतिशत तप करते हैं। तप तो करना चाहिए न? अभी जब आपको समभाव से निकाल करना पड़ता है, क्या उस क्षण तप नहीं करते?

प्रश्नकर्ता : करना ही पड़ता है न, दादा।

दादाश्री : वे छोटे-छोटे हैं लेकिन बाद में बड़े तप होने चाहिए। बेटा मर जाए, कोई रास्ते में एक लाख रुपए के गहने लूट लें तब भी असर नहीं हो, पेट का पानी तक नहीं हिले, वह है दादा का विज्ञान। यदि बुद्धि के कहे अनुसार किया तो जैसे थे वैसे ही हो जाएँगे न फिर। वहाँ पर तप करना। रास्ते में लुट जाओ तो क्या करोगे आप?

प्रश्नकर्ता : हाय-हाय तो नहीं करेंगे, जो गया वह तो वापस आए या न भी आए, उसकी बहुत चिंता नहीं है लेकिन मन में ऐसा तो रहेगा कि मुझे लूट ले गया।

दादाश्री : उससे हमें क्या फायदा होगा? क्या हेल्प होगी, वह देखना है न? वे लूटते नहीं हैं, वे वही ले जाते हैं जो उनका है। आपका कोई नहीं ले जा सकता।

प्रश्नकर्ता : अंदर तप कैसे होता है? लूट ले जाएँ, उसके बाद अंदर क्या करना है?

दादाश्री : अंदर तपने लगता है, तब तप सहन नहीं होता इसलिए फिर वह खुद शोर मचाने लगता है। वह भी तप जाता है। वहाँ ज्ञान से तप करना है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान से एडजस्ट हो जाता है, पाँच आज्ञा से। लेकिन 'लूट लिया', अंदर से इस तरह शोर मचाता ही रहता है।

दादाश्री : उस समय हृदय तपता है। सहन नहीं होता। विचारों के भँवर आते हैं उठते हैं सारे। उस समय अंदर देखते ही रहना है तपे हुए को। उस घड़ी मन नहीं बिगड़ना चाहिए सामने वाले के लिए। ज़रा सा भी मन बिगड़ा तो उसे तप कैसे कहेंगे? चाहे कैसी भी परिस्थिति में समता रहे तो वही अदीठ तप है! और क्या है? सब कुछ खुद का ही है, किसी और का नहीं है। किसी और का आपको भुगतना पड़े, ऐसा नहीं हो सकता। अतः उसमें प्योर रहना है। प्योर बनना है, इम्प्योरिटी नहीं रहनी चाहिए। कचरा सब निकल जाना चाहिए न! दादा के पास तो सब निकल जाता है। दादा सभी को भगवान बनाते हैं। आपने ऐसा बदलाव नहीं देखा?

प्रश्नकर्ता : कोई अपमान करे और उसे सहन कर लें तो फिर उसे भी तप माना जाएगा?

दादाश्री : वह भी प्राप्त तप कहलाता है। आपका तप जल्दी क्यों आया क्योंकि जल्दी हल आने को है। साफ होने को है स्पीडिली! उखाड़ते

समय अंदर तप होता है न? चित्त में दुःख होता है? उसे तप कहते हैं। उस तप को देखते रहना है। उसे दुःख मत मानना। दुःख मानोगे तो उस समय तप चला जाएगा। दुःख में समता रखने को ही तप कहते हैं। नापसंद को पसंदीदा बना दिया तो रास्ता मिलेगा!

हँसते-हँसते ज़हर पचाना सीखो

हम नीलकंठ हैं। बचपन से जो भी कोई ज़हर दे गया, वह हम हँसते-हँसते पी गए और ऊपर से आशीर्वाद भी दिया और इसीलिए हम नीलकंठ बने।

ज़हर तो आपको पीना ही पड़ेगा। हिसाब वाला है इसलिए प्याला तो सामने आएगा ही। अब आप हँसते-हँसते पीओ या मुँह बिगाड़ कर पीओ, पीना तो पड़ेगा ही। अरे, आप लाख नहीं पीना चाहो, तब भी लोग ज़बरदस्ती पिलाएँगे। उससे अच्छा तो हँसते-हँसते पी कर ऊपर से आशीर्वाद दे कर ही क्यों नहीं पीएँ? इसके बिना नीलकंठ कैसे बन पाएँगे? जो प्याला दे जाते हैं, वे तो आपको उच्च पद देने आते हैं। वहाँ पर यदि आप मुँह बिगाड़ोगे तो वह पद आपसे दूर चला जाएगा।

जब तक ऐसा है कि 'मैं चंदूभाई हूँ,' तब तक सब कड़वा लगेगा लेकिन हमारे लिए तो यह सब अमृत बन गया है! मान-अपमान, कड़वा-मीठा वे सारे द्वंद्व हैं। जो अब हम में नहीं रहें, हम द्वंद्वतीत हैं इसलिए तो यह सत्संग करते हैं न? आखिरकार तो सभी को द्वंद्वतीत दशा ही प्राप्त करनी है न?

यह कड़वी दवाई यदि रास आ जाए, तो फिर और कोई झंझट रहेगा ही नहीं न! और फिर अब आपको मालूम हो गया है कि इसमें हमारा

ही फायदा है। जितना मीठा लगता है, उतना ही कड़वा भरा पड़ा है। अतः पहले कड़वा पचा लो फिर मीठा सहज ही निकल जाएगा। उसे पचाना बहुत भारी नहीं पड़ेगा। कड़वी दवाई पच गई तो बहुत हो गया! फूल लेते समय हर कोई हँसता है लेकिन पत्थर पड़ें तब?

अपमान के समय समता की चाबी

अगर कोई मान दे तो भी सहन नहीं हो पाता। जिसे अपमान सहन करना आ गया, वही मान सहन कर सकता है। किसी ने दादा से पूछा कि लोग आपको फूल चढ़ाते हैं, उन्हें आप क्यों स्वीकार करते हैं? तब दादा ने कहा, 'ले भाई, तुझे भी चढ़ाएँ, लेकिन तुझ से सहन नहीं होगा।' लोग तो मालाओं का ढेर देख कर दंग हो जाएँगे! किसी के पैरों को छूने जाएँ तो वह तुरंत खड़ा हो जाएगा!

'जब अपमान का भय नहीं रहेगा, तब कोई अपमान नहीं करेगा', ऐसा नियम ही है। जब तक भय है, तब तक व्यापार। भय गया नहीं कि व्यापार बंद। आपके बहीखाते में मान और अपमान का खाता रखो। जो कोई भी मान-अपमान दे कर जाए, उसे बहीखाते में जमा करते जाओ, उधार मत करना। चाहे कोई कितना भी बड़ा या छोटा डोज़ दे जाए, उसे बहीखाते में जमा कर लो। निश्चय करो कि महीने भर में सौ अपमान जमा कर लेने हैं। जितने ज़्यादा आएँगे, उतना अधिक मुनाफा। यदि सौ के बजाय सत्तर मिलें, तो तीस का घाटा। फिर दूसरे महीने में एक सौ तीस जमा करना। जिसके खाते में तीन सौ अपमान जमा हो गए, उसे फिर अपमान का भय नहीं रहेगा फिर वह पार उतर जाएगा। पहली तारीख से बहीखाता शुरू कर ही देना। इतना हो जाएगा या नहीं?

सम्यक् समझ लाती है समता

यह तो कहेगा, 'इसने मेरा अपमान किया!' छोड़ो न! अपमान तो निगल जाने जैसा है। पति अपमान करें, तब याद आना चाहिए कि यह तो मेरे ही कर्म का उदय है और पति तो निमित्त है, निर्दोष है और जब कर्म के उदय बदलें, तब पति 'आओ-आओ' करता है इसलिए आपको मन में समता रख कर निबेड़ा ला देना है। यदि मन में हो कि 'मेरा दोष नहीं है फिर भी मुझे ऐसा क्यों कहा?' इससे फिर रात को तीन घंटे जगती है और फिर थक कर सो जाती है।

स्त्री डॉट और रात उसी घर में गुज़ारनी पड़े, वह तो सब से बड़ा टेस्ट एक्ज़ामिनेशन (परीक्षा) है! यानी स्त्री के साथ रहते हुए भी मोक्ष होना चाहिए। स्त्री की गालियाँ खाए फिर भी समता रहे, ऐसा मोक्ष होना चाहिए।

आड़ाई रूपी समुद्र को लाँघना है। आप आड़ाईयों के इस पार खड़े हैं और जाना है उस पार। कोई अपनी आड़ाईयों को उतारने में निमित्त बने तो उसमें असहज नहीं होते हुए, उस निमित्त को परम उपकारी मान कर समता से वेदन करना।

भगवान पार्श्वनाथ का समत्व योग

समता तो उनकी दिखाई देती है, पार्श्वनाथ भगवान की। फणधारी नाग रक्षा करता है और कमठ कंकड़ फेंकता है, बरसात बरसाता है। फणधर नाग रक्षा करते हैं उन पर राग नहीं और कमठ कंकड़ फेंकते हैं, उन पर द्वेष नहीं। उसे समता कहते हैं। वही समता कही जाती है। बाकी, लोग समता को बहुत निम्न भाषा में ले गए हैं। समता शब्द का उपयोग ही नहीं किया जा सकता। ज्ञान मिलने के बाद में समता और ज्ञान मिलने से पहले समता शब्द का उपयोग करना हो तो इस समता शब्द का उपयोग नहीं किया जा सकता।

यह समता तो वीतरागों की समता है। वह तो शम और उपशम है लेकिन यह समता तो वीतरागों की समता है। मालिकी वाली चीज़ है ही नहीं। समता शब्द, वह लोगों की सहनशीलता है। इन साधु-आचार्यों में सब सहनशीलता ही कहलाती है। वीतरागों की समता तो बहुत बड़ी चीज़ है। यह जो पार्श्वनाथ की समता दिखाई देती है न, उसे कहते हैं समता। वह जो देव रक्षण करते हैं, उनके प्रति किंचित्मात्र भी राग नहीं और कमठ कंकड़ फेंकते हैं, उन पर किंचित्मात्र भी द्वेष नहीं, ऐसे थे पार्श्वनाथ भगवान! एक क्षण के लिए भी वैसा ध्यान रहे तो काम हो जाएगा! फिर और क्या चाहिए?

यदि किसी के साथ बैर बंधे तो सात जन्म बिगाड़ता है। वह तो ऐसा ही कहेगा कि, 'मुझे तो मोक्ष में नहीं जाना है लेकिन तुझे भी मैं मोक्ष में नहीं जाने दूँगा!' पार्श्वनाथ भगवान का कमठ के साथ दस जन्म तक जो बैर था, वह बैर, जब भगवान वीतराग हुए, तब जा कर छूटा! कमठ द्वारा किए गए उपसर्ग तो भगवान ही सहन कर सकते हैं! आज के इंसानों के बूते की बात ही नहीं है। पार्श्वनाथ भगवान पर कमठ ने अग्नि बरसाई, बड़े-बड़े पत्थर डालें, मूसलाधार बारिश की फिर भी भगवान ने सब कुछ समताभाव से सहन किया और ऊपर से आशीर्वाद दिए और बैर धो डाला।

समता से खत्म हुए दस जन्मों के बैर

आपका दिया हुआ ही वापस देते हैं, यह निश्चित है। पार्श्वनाथ भगवान को इतना तो पता था न कि 'ये लोग मुझे मेरा दिया हुआ ही वापस दे रहे हैं।' इसमें यदि उत्तेजित हो जाए तो मुद्दत खत्म होने का टाइम बढ़ता जाता है।

पार्श्वनाथ भगवान उत्तेजित नहीं हुए थे, अतः दस जन्मों में खत्म हो गया।

प्रश्नकर्ता : फिर भी दस जन्म चला! वह क्या कम कहलाएगा?

दादाश्री : ये दस जन्म कितने जन्मों के आधार पर हैं? क्या वह जानता है तू?

प्रश्नकर्ता : वह कुछ पता नहीं है।

दादाश्री : इस एक बाल के बराबर। दस जन्म एक बाल के बराबर भी नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : ओ हो! अनंत जन्मों के सामने तो कुछ भी नहीं है यह। इसलिए उन्होंने हर जन्म में समता बनाए रखी थी?

दादाश्री : तब जा कर खत्म हुआ। पहले दो-तीन जन्मों तक ज़रा कच्चा रहता है चिढ़ता है इसलिए बढ़ता जाता है। यह जगत् वैसा नहीं है कि एकदम से समता रह पाए। यह 'अक्रम विज्ञान' तो अलग ही तरह का है, इसलिए रह पाता है।

समभाव - समता - सहजता

प्रश्नकर्ता : फाइलों का निकाल करना है लेकिन उसमें लिए आप ने एक ही भाव कहा है, समभाव से।

दादाश्री : समभाव रख कर मन में ऐसा निश्चित करोगे न तो उस व्यक्ति पर असर होगा, उसके मन पर।

प्रश्नकर्ता : फिर अन्य शब्द का मतलब मुझे समझाइए। दूसरा है 'समता'।

दादाश्री : वीतरागता रहेगी तो बाहर समता रहेगी। नापसंद के प्रति अभाव नहीं होता और पसंदीदा के प्रति भाव नहीं होता, उसे कहते हैं वीतरागता! अभी वीतरागता लाने के लिए समभाव से निकाल करने को कहा है। समभाव से निकाल करने पर उसका जो परिणाम आता है तब वीतरागता

के कुछ अंश प्राप्त होते हैं। जैसे-जैसे समभाव से निकाल करता जाता है न, वैसे-वैसे वीतरागता के अंश प्राप्त होते जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन समता और समभाव में क्या फर्क है?

दादाश्री : फर्क है। समभाव से तो निकाल करना है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह तो समता रख कर भी निकाल हो सकता है न! यदि ये भाई मुझे धौल मारें, और यदि मैं ऐसा कहूँ कि 'नमस्कार', तो पूर्ण समता हो गई न!

दादाश्री : नहीं, उसे समता नहीं कहेंगे। उसे समभाव से निकाल करना कहेंगे। समता में तो कैसा रहता है कि वह मार रहा हो, उस समय खुद उसे आशीर्वाद दे, तब समता कहलाती है। भीतर बिल्कुल भी परिणाम नहीं बदलें, वह समता है और निकाल अर्थात् परिणाम बदल जाते हैं लेकिन निकाल कर देता है। बात को आगे नहीं बढ़ाता। वह बढ़ेगा नहीं, कम हो जाएगा।

समभाव अर्थात् क्या कि तराजू इस तरफ झुक जाए तो दूसरी ओर थोड़ा कुछ रख कर समान करना। तो ऐसी मेंढक की पाँच शरी कितनी देर टिकती है? फिर भी समभाव को उत्तम भाव माना गया है। बैलेन्स रखने का प्रयत्न करता है न? और समता यानी यदि कोई फूल चढ़ाएँ तो उस पर राग नहीं और कोई पत्थर मारे तो उस पर द्वेष नहीं। ऊपर से उसे आशीर्वाद देता है!

प्रश्नकर्ता : और अब तीसरा शब्द, 'सहज भाव से निकाल' यह समझाइए।

दादाश्री : सहज भाव से निकाल, वैसा हमारा रहता है, कुछ बातों में। सहज भाव का मतलब, जो बिना प्रयत्न के हो जाए।

सहज भाव यानी क्या? प्रगमित होना चाहिए। प्रगमित यानी कि पिछले जन्म में किया गया भाव अभी सहज उत्पन्न हो जाता है। *निकाल* तो अभी आप से भी हो सकता है। आपने यदि कुछ पुराने भाव किए होंगे तो वे आज मदद करेंगे। वे पुराने भाव हैं, वे सभी सहज भाव हैं। सहज भाव यानी उनमें आज की क्रिया नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। ऐसा आपसे बहुत इज़िली (सरलता से) हो जाता है।

दादाश्री : सहज रूप से।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अब चौथा बचा। 'चातुर्य, चतुराई, कौशल्य!'

दादाश्री : हाँ! कौशल्य दो प्रकार का होता है। एक सांसारिक कौशल्य और एक अध्यात्मिक कौशल्य, ज्ञानी का कौशल्य। ज्ञानी का कौशल्य कैसा होता है कि एक व्यक्ति ने कुछ ऐसा कहा कि उससे सात लोगों को दुःख हो जाता है, तब ज्ञानी ऐसे कौशल्य का उपयोग करते हैं और ऐसा शब्द बोल देते हैं कि उससे बोलने वाले को भी दुःख नहीं होता और उन सातों का दुःख भी खत्म हो जाता है। उसे कौशल्य कहा जाता है। उसे बुद्धि कला कहते हैं। वह एक प्रकार की बुद्धि कला है। कुछ शब्दों में सभी लोगों को संतोष हो जाता है!

प्रश्नकर्ता : अब जिन फाइलों का *निकाल*, इन चारों में से आपने जो यह एक कहा, 'समभाव से।' ये दूसरे जो शब्द हैं, उन्हें छूने जैसा नहीं है।

दादाश्री : समभाव रखना। समभाव से *निकाल* करोगे तो आपको वे सारी सीढ़ियाँ आएँगी। 'समभाव से *निकाल*' समझ गए न आप? वही! हमें अन्य कुछ भी नहीं है इसमें। हम सिर्फ वही कर रहे हैं जो वीतरागों ने किया था और वही आपको दिखा देते हैं।

नापसंद में रखो मन साफ

नापसंद चोखे मन से सहन कर पाएँगे, तब वीतराग हो पाएँगे।

प्रश्नकर्ता : चोखा मन का मतलब क्या?

दादाश्री : चोखा मन यानी सामने वाले के लिए खराब विचार नहीं आएँ, वह। यानी क्या? कि निमित्त को दुःख नहीं देना। कदाचित्त सामने वाले के लिए खराब विचार आ जाएँ तो तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लें और उसे धो दे।

प्रश्नकर्ता : मन चोखा हो जाए, वह तो अंतिम स्टेज की बात है न? और जब तक संपूर्ण चोखा नहीं हो जाता, तब तक प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं न?

दादाश्री : हाँ, वह सही है, लेकिन कुछ बातों में चोखा हो चुका होता है और कुछ बातों में नहीं हुआ होता। वे सब स्टेपिंग हैं। जहाँ चोखा नहीं हुआ है वहाँ प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

हमें तो शुरू से ही दुनिया के एक-एक शब्द का विचार आता था। पहले भले ही ज्ञान नहीं था लेकिन 'विपुल मति' थी इसलिए बोलते ही स्पष्ट समझ में आ जाता था। चारों ओर का तौल निकल जाता था। बात निकले तो तुरंत ही सार निकल जाए, उसे 'विपुल मति' कहते हैं। विपुल मति होती ही नहीं है न किसी में। 'यह' तो एक्सेप्शनल (अपवाद) केस हो गया है! जगत् में विपुल मति कब कहलाती है? ऐसी मति हो जो एवरीव्हेर एडजस्ट कर पाए, तब। यह तो कच्चा काटने का हो, उसे उबाल देता है और उबालने का हो, उसे कच्चा काट देता है तो कहाँ से एडजस्ट होगा? लेकिन एवरीव्हेर एडजस्ट होना चाहिए।

पसंद-नापसंद में करो समभाव से निकाल

जो भी संयोग आ मिले, वे सब फाइल हैं। यहाँ से जाते हुए बाँद्रा की खाड़ी आ जाए तो वह संयोग है। क्या उसे फाइल नहीं कहा जाएगा? वहाँ यदि आप कहो, 'देखो न! यह सरकार, गटर ठीक नहीं करवाती और यह सब...' तो बिगड़ेगा। फाइल का समभाव से निकाल करना है। ठीक नहीं लगे तो कुछ देर तक नाक दबा कर रखना। वर्ना अगर आपको समभाव से निकाल करना हो तो बदबूदार हो फिर भी आपको एतराज नहीं होना चाहिए। यह सारी दुनिया बदबूदार भी चला ही लेती है न! खुशबूदार तो कहीं पर होता ही नहीं है न? तकिया खराब आ जाए और अगर वहाँ पूरी रात रहना हो तो हमें क्या करना चाहिए? क्लेश करेंगे? तो किस तरह उसका समभाव से निकाल करेंगे?

प्रश्नकर्ता : उसके साथ एडजस्ट हो जाना है।

दादाश्री : हाँ। एडजस्ट हो जाना है। यह 'अच्छा नहीं है', उसके बजाय वहाँ आपको कहना है कि 'बहुत अच्छा है, इस ओर अच्छा है, इस ओर पलट दीजिए न! इस ओर अच्छा है' ऐसा कह कर फिर सो जाना।

नापसंद व्यक्ति को 'छीट, छीट, हट' करता है। 'अरे भाई, ऐसा मत कर न!' उसके बजाय कहना, 'कब से आए हैं? बैठिए, चाय लेंगे?' नापसंद जो आपके अंदर है न, उसे पता नहीं चलना चाहिए, ऐसा रख सकते हैं या नहीं? समभाव से निकाल करना हो तो रख सकते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : रख सकते हैं।

दादाश्री : उसे कपट नहीं माना जाएगा। कपट तो यदि आपको उससे कुछ लेना है या

उससे लाभ उठाना है, तब कपट कहा जाएगा। उसका समभाव से निकाल करना वह कपट नहीं है बल्कि सब से बड़ी चीज़ है, थ्योरी है।

नापसंद का समभाव से निकाल करना सब से बड़ा तप कहा जाता है। समभाव से निकाल करना यानी क्या? सामने वाले के लिए अभाव नहीं हो और ऐसा कुछ भी नहीं हो। नापसंद का प्रोटेक्शन करके चले जाने का भाव मत करना, चले जाना ठीक नहीं है। पलायन हो जाना भी गलत कहा जाएगा। इसका निकाल करना ही चाहिए। कई लोग कहते हैं, 'नहीं! यह पसंद नहीं है। चलो, उठो यहाँ से। वह बहुत भयंकर भूल है। कुछ नापसंद आ जाए तो वहाँ बैठे ही रहना चाहिए।

राग-द्वेष का निकाल करने पर हल आएगा

यह जो 'अच्छा नहीं लगता' उसका कोई हल लाना चाहिए या नहीं। जो 'अच्छा लगता' है उसका भी हल लाना है उसे संभाल कर नहीं रखना है। जो बातें अच्छी लगती हैं, उन्हें संभाल कर नहीं रखना है। उनका भी हल लाना है और इनका भी हल लाना है। जो 'अच्छा लगता' है, वह भरा हुआ राग निकल रहा है और जो 'अच्छा नहीं लगता', वह भरा हुआ द्वेष निकल रहा है। अतः द्वेष का हल लाना है। अतः वहाँ हमारी तरह रहना है। सभी के साथ मिलजुल कर! क्योंकि द्वेष की वजह से जुदाई हो जाती है। सब के साथ मिल कर रहने से जुदाई मिट जाती है और द्वेष खत्म हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : द्वेष का निकाल करना है, ऐसा तो सामान्य रूप से समझ में आता है लेकिन राग का भी निकाल करना है वह तो कुछ भारी बात है।

दादाश्री : सब का निकाल करना पड़ेगा। निकाल किए बगैर तो कैसे चलेगा? संभाल कर

रखा हुआ माल सौंप देना पड़ेगा। जिस-जिस के परमाणु हैं, उनके वे परमाणु सौंप कर हमें मुक्त हो जाना है। नापसंद हों, वे भी सौंप देने पड़ेंगे और पसंदीदा भी सौंप देने पड़ेंगे। उसके बाद वीतराग होना है। अब यह चारित्रमोहनीय यानी भरे हुए माल को निकालना। भरे हुए माल का हिसाब चुकाना है। इस चारित्रमोह का समभाव से निकाल करना है।

ऐसा व्यवहार विकसित करे आत्म शक्तियाँ

इतना निश्चित तौर पर मानना कि नापसंद संयोगों के आने में ही आपका श्रेय है। पसंदीदा संयोगों में आप पर दाग लगता है।

कोई रोंग व्यवहार नहीं आया तो आपकी शक्तियाँ भी विकसित नहीं होंगी इसलिए उसका उपकार मानना कि 'भाई, तेरा उपकार है। तूने मेरी कुछ शक्ति डेवलप कर दी।'

प्रश्नकर्ता : ठीक है। हाँ! वह परम सत्य है।

दादाश्री : समझेंगे तो हल आया, वर्ना हल नहीं आया। धर्म तो व्यवहार में ही होता है। आपको सिर्फ इस तरह रहना है कि 'मुझे व्यवहार में आदर्श रहना है।' ऐसी भावना रखनी है। व्यवहार नहीं बिगड़ना चाहिए और यदि बिगड़ जाए तो उसका समभाव से निकाल कर देना चाहिए।

अपने यहाँ जरा भी बखेड़ा या दखल कुछ है? थोड़ा मतभेद हो जाता है, झंझट हो जाती है, सब होता है लेकिन वह निकाली भाव है। तंत नहीं है इसलिए फिर सुबह चाय फर्स्ट क्लास बनती है। शाम को झगड़ा करके दूध में नमक डाल दिया हो, तब भी सुबह उस दूध से चाय बन जाती है! दूध फट नहीं जाता, बारह घंटे बाद भी।

प्रश्नकर्ता : हमें अपना मोक्ष का काम निकाल लेना है। फाइलें तो हमें छोड़ेंगी नहीं।

दादाश्री : कोई अपना नहीं बनेगा। यह आत्मा अपना बनेगा, और कोई नहीं बनेगा। अपना यही भाव है न कि, 'मोक्ष में जाना है'! तो क्या पराया काम में आया?

प्रश्नकर्ता : नहीं आया।

दादाश्री : फिर भी व्यवहार नहीं छोड़ सकते न? निकाल कर देना है, लोगों में गलत नहीं दिखें इस प्रकार से। हम भी नापसंद का निकाल करते हैं न! नहीं करते?

पसंद-नापसंद फाइलों के साथ

अब आपके लिए, जो अच्छे लगें वे भी 'फाइल' हैं और अच्छे न लगें, वे भी 'फाइल' हैं। जो अच्छे नहीं लगते उनके साथ जल्दी निकाल करना होगा। जो पसंद हैं, उनके साथ तो निकाल हो जाएगा। नापसंद है अर्थात् वह पूर्वजन्म की जबरदस्त 'फाइल' है। देखते ही आपको अच्छा नहीं लगता। वह आ कर बैठें तब आपको क्या करना है? मन में तय कर लेना है कि 'फाइल का समभाव से निकाल करना है'। फिर कहना, 'आप आए, बहुत अच्छा किया। कई दिनों बाद आए, हमें बहुत अच्छा लगा। भाई के लिए जरा चाय लाइए, नाश्ता ले आइए।' 'फाइल का निकाल' करने लगे तो निकाल होने लगेगा लेकिन सब कुछ सूपरफ्लयुअस करना है, ड्रामेटिक! वे समझेंगे कि, 'ओहोहो, मुझ पर बहुत भाव दर्शा रहे हैं!' वह खुश हो जाएगा और सारा बैर भूल जाएगा। बैर छूट जाएगा तो 'समभाव से निकाल' हो जाएगा। वह जाने लगे तब हमें कहना है कि, 'देखना भाई, हमारा कोई दोष हुआ हो तो.....' तब वही कहेगा कि, 'नहीं-नहीं! आप तो बहुत अच्छे इंसान हैं।' यानी हिसाब चुकता हो गया।

लोगों को और कुछ नहीं चाहिए। बस अहंकार संतुष्ट हुआ तो बहुत हो गया।

यदि कोई व्यक्ति आपको मारने आए, खून करने आए लेकिन 'फाइल का निकाल' करना है, आपके मन में ऐसे भाव उत्पन्न हुए, कि तुरंत उसके भाव बदल जाएँगे और तलवार या छुरी जो भी होगा, वह नीचे रख कर चला जाएगा।

फाइल के प्रति प्रेजुडिस (पूर्वग्रह) छोड़ दोगे तो वह फाइल आपके कहे अनुसार करेगी। हमारे कहे अनुसार करने से तो संसार अच्छा चलेगा और मोक्ष में भी जा सके इतना सुंदर विज्ञान है यह! और प्रतिक्षण विज्ञान का उपयोग हो सकता है लेकिन विज्ञान का उपयोग करना आना चाहिए।

नापसंद शब्द निकाल दो डिक्शनरी में से

आप चौबीसों घंटे मेरे साथ रहते हो तो क्या ऐसा कुछ देखा है कि, 'हमें कुछ पसंद नहीं हो'?

प्रश्नकर्ता : नहीं देखा है।

दादाश्री : कई बार तो मुझे सीढ़ियाँ उतरनी हों फिर भी अगर आप कहते हो कि 'नहीं, बैठ जाइए' तो मैं वापस बैठ जाता हूँ। मैं 'व्यवस्थित' को देखता हूँ कि 'व्यवस्थित' किस तरफ ले जा रहा है, सभी एविडेन्स। 'नापसंद' तो अपनी डिक्शनरी में होना ही नहीं चाहिए। वह 'नापसंद' भी सिर्फ किन चीजों के लिए? ब्रान्डी, सिगरेट, ऐसी कुछ ही चीजों के लिए, विकारी स्वभाव जो कि मनुष्यपन का होश गवाँ दें, ऐसी चीजें नहीं होनी चाहिए। मनुष्यपन में से नीचे ले जाए, ऐसा नहीं होना चाहिए। जो मानवता को खत्म कर दे, ऐसी चीजों में आपको 'नापसंदगी' रहनी चाहिए। मनुष्यों के लिए जो चीज नहीं चल सकती, वैसा नहीं होना चाहिए। यह तो आपके पास है ही नहीं फिर क्यों 'नापसंद' करते हो?

आप तो रात-दिन देखते हो लेकिन क्या हम ने ज़रा भी 'नापसंदगी' दिखाई हैं किसी चीज़ में? मुझे से तो अगर कोई ऐसा कहे कि, 'मुझे पसंद नहीं है,' तो बहुत खराब लगता है। ऐसा कहीं कहना चाहिए इंसान को? दवाई पीना अच्छा नहीं लगता, संडास जाना अच्छा नहीं लगता। किसे अच्छा लगता होगा यह सब? करना ही पड़ता है यह तो। और वह तो, 'पसंद है' ऐसा रख कर करना होगा।

प्रश्नकर्ता : 'पसंद है' ऐसा करके करना होगा?

दादाश्री : नहीं तो फिर क्या? 'पसंद नहीं है' कहेंगे तो डर लगेगा। हमेशा ही जो चीज़ पसंद नहीं होती, उसका भय घुस जाता है। पुलिस वाला अच्छा नहीं लगता तो पुलिस वाले को देखते ही भय लगता है। 'अच्छा लगता है' कहेंगे तो भय नहीं लगेगा। पुलिस वाला 'नापसंद' हो तो भय लगता है, ऐसा आप जानते हो? नहीं जानते क्या?

प्रश्नकर्ता : जानता हूँ और 'पसंद है' ऐसा कहेंगे तो?

दादाश्री : तो भय नहीं लगेगा। बस यही है। जगत् में किसी भी चीज़ के लिए 'पसंद नहीं है,' ऐसा तो कहना ही मत।

बिगड़े हुए केस सुधरेंगे समता से

एक भाई थे। वे रात को दो बजे न जाने क्या-क्या करके घर आते होंगे, उसका वर्णन करने जैसा नहीं है। आप समझ जाओ। तब फिर घर में सभी ने निश्चय किया कि इनको डाँटें या घर में नहीं घुसने दें? क्या उपाय करें? वे उसका अनुभव कर आए। बड़े भाई कहने गए तो उसने बड़े भाई से कहा कि, 'आपको मारे बगैर नहीं छोड़ूँगा' फिर घर वाले सभी मुझे पूछने आए कि,

‘इसका क्या करें? यह तो ऐसा बोलता है।’ तब मैंने घर वालों से कह दिया कि, “किसी को उसे एक अक्षर भी नहीं कहना है। आप बोलोगे तो वह ज़्यादा ‘फ्रन्ट’ (सामने) हो जाएगा, और घर में घुसने नहीं दोगे तो वह विद्रोह करेगा। उसे जब आना हो, तब आए और जब जाना हो, तब जाए। आपको राइट (सच) भी नहीं बोलना है और रोंग (झूठ) भी नहीं बोलना है, राग भी नहीं रखना है और द्वेष भी नहीं रखना है, समता रखनी है, करुणा रखनी है।’ तब तीन-चार सालों बाद वह भाई सुधर गया। आज वह भाई व्यापार में बहुत मदद करता है! जगत् निकम्मा नहीं है लेकिन काम लेना आना चाहिए। सभी भगवान हैं और हर एक अलग-अलग काम ले कर बैठे हैं इसलिए नापसंद जैसा रखना मत।

पराकाष्ठा समता की, ज्ञानी में

उदय तो हर एक के बदलते रहते हैं। उदय में समता भाव से रहना, वही है ‘ज्ञानियों’ का फर्ज।

अभी कोई अगर धौल लगाए और मैं चिढ़ जाऊँ तो फिर मैं ज्ञानी कहलाऊँगा ही कैसे? मुझे गालियाँ दें, कपड़े निकाल लें, तब यदि मेरे चेहरे पर ज़रा सा भी बदलाव आ जाए तो मैं ज्ञानी कहलाऊँगा ही कैसे? ज्ञानी में पूरे वर्ल्ड की समता रहती है। कोई उन्हें कुचल-कुचल कर मारे-करे फिर भी समता रखते हैं और साथ में आशीर्वाद भी देते हैं।

अच्छा-बुरा से तू खुद बंध जाएगा

कभी खुद को पसंद हो ऐसी कोई बात आती है और वापस नापसंदगी वाली आती है, ‘उसे’ पसंदीदा संयोग मिलता है और नापसंद मिलता है। अब जब मनपसंद आता है, तब

उनमें वीतराग क्या कहते हैं कि इनमें से कोई भी चीज़ पसंद करने जैसी नहीं है और नापसंद करने जैसी भी नहीं है, इनसे ‘तू’ अलग रह। नापसंद करने जैसी कोई चीज़ है ही नहीं। फिर भी ‘तू’ अपने आप बंध रहा है कि यह चीज़ अच्छी है और इसे ‘अच्छी है’ कहा, तो दूसरे को ऐसा कहेगा ‘खराब है’। एक को अच्छा कहा इसलिए दूसरे को खराब कहेगा ही। अतः वीतराग क्या कहते हैं? ‘ये सभी संयोग ही हैं और यह तो हम ने विभाजित किया है कि यह संयोग अच्छा है और यह संयोग खराब है और ये संयोग फिर वियोगी स्वभाव वाले हैं इसलिए किसी भी संयोग को पसंदीदा मत बनाना ताकि नापसंद संयोग को तुझे धक्का नहीं मारना पड़े। यदि तू धक्का मारने गया तो तेरा मोक्ष चला जाएगा। कोई भी नापसंद संयोग मिल जाए तब यदि उस घड़ी तू उस संयोग को धक्का मारेगा तो तू फिर से उलझ जाएगा। इसलिए उस संयोग को धक्का मारने के बजाय उसे समताभाव से तू पूरा कर। वह वियोगी स्वभाव का ही है इसलिए अपने आप वियोग हो ही जाएगा, तुझे कोई झंझट ही नहीं और फिर भी यदि उस नापसंद संयोग के सामने तू उल्टा रास्ता करने जाएगा तब भी काल तुझे छोड़ेगा नहीं। उतने काल तक तुझे मार खानी ही पड़ेगी। अतः यह संयोग वियोगी स्वभाव वाला है, उस आधार पर धीरज रख कर तू चलने लग।’

गजसुकुमार को मिट्टी की पगड़ी बाँध दी थी न, उनके ससुर जी ने? और उसमें अंगारे रखे। उस घड़ी गजसुकुमार समझ गए कि ऐसा संयोग मुझे आया है और उसमें, ससुर ने मोक्ष की पगड़ी बंधवाई हैं, ऐसा संयोग मिला है। अब यह उन्होंने मान लिया, ‘बिलीफ’ में ही माना कि यह मोक्ष की पगड़ी बंधवाई है और उसमें अंगारे

रखे। अब नेमिनाथ भगवान ने गजसुकुमार से कहा था कि, “तेरा’ स्वरूप ‘यह’ है और ये संयोग ‘तेरा’ स्वरूप नहीं हैं। संयोगों का ‘तू’ ज्ञाता है। सभी संयोग ज्ञेय हैं।” अतः वे ‘खुद’ उन संयोगों में भी ज्ञाता रहे और क्योंकि ज्ञाता रहे इसलिए मुक्त हो गए और मोक्ष भी हो गया।

नापसंदगी में रमणता के ज्ञाता, वही स्व-रमणता

स्वरूप का यह ज्ञान प्राप्त होने के बाद मोक्ष तो हो ही गया है लेकिन अब जो रमणता हो जाती है, वह दो प्रकार की है :

(1) ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ ऐसा जानो और जो अच्छा नहीं लगता उसमें रमणता करनी पड़ती है। बाहर जाना अच्छा नहीं लगता लेकिन पहले हस्ताक्षर कर दिए है तो उस रमणता में रहना पड़ेगा।

(2) स्वरूप की रमणता -

लोग पहली रमणता में तन्मयाकार हो जाते हैं अच्छी लगने वाली अवस्था में तन्मयाकार हो जाते हैं, तब भी वे अच्छे लगने वाले कर्म का बंधन करते हैं और नापसंद अवस्था में तन्मयाकार नहीं होते, तब भी वे नापसंद चीज़ का कर्मबंधन करते ही हैं जबकि हम सब को भी पहले प्रकार की रमणता होती तो ज़रूर है लेकिन हम उसके ज्ञाता-दृष्टा रहते हैं। हम उसमें तन्मयाकार नहीं हो जाते।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है। चंदू को देखते रहते हैं।

दादाश्री : चंदू जो भी करता है, वह ज्ञेय है और आप ज्ञाता हो, आप ज्ञाता हो, वह स्व-रमणता है। ज्ञेय को देखना ही स्व-रमणता है।

सार निकालने वाले बनते हैं मोक्ष के अन्वेषक

हर एक संयोग में आपको खुद को एकाकार होने जैसा नहीं है, उसके तो आप सिर्फ ज्ञाता-दृष्टा मात्र हैं। संयोगों के साथ आपको झगड़ा करने की भी ज़रूरत नहीं है या फिर उनके साथ बैठे रहने की भी ज़रूरत नहीं है। कोई भी संयोग आए तो कह देना चाहिए कि, ‘गो टु दादा।’ सभी संयोग तो निरंतर बदलते ही रहेंगे और आप उनसे भिन्न हैं। विचार आए, वह संयोग और उनमें एकाकार हो कर हिल जाएँ, वह भ्रान्ति है, उन्हें तो मात्र देखना और जानना चाहिए।

संसार में रिलेटिव में जब भय सिर पर आए, तब वह पूरा आत्मा में घुस जाता है और आत्मा का अनुभव हो जाता है! छोटा बच्चा हो, वह यों तो खुद का खिलौना छोड़ता नहीं है, हटाने जाएँ तो ज़िद करता है। इतने में बिल्ली आ जाए तो डर कर सब कुछ छोड़ कर भाग जाता है! जिसे स्वरूप ज्ञान मिला हो उसे तो यदि कभी बड़ा भय आए न, तब तो उसे संपूर्ण आत्मानुभव, केवलज्ञान ही हो जाए। संयोग आप लोगों को भी मिलते हैं; फिर भी आप लोगों को कौन से संयोग पसंद करने चाहिए? कि जो रियल में हैल्प करें वे, जो रियल का मार्गदर्शन दें उन संयोगों को पसंद करना चाहिए। जो रिलेटिव का मार्गदर्शन दें, उन संयोगों को पसंद नहीं करने हैं। जगत् के लोग संयोगों के दो भाग कर देते हैं: एक फायदे वाले और दूसरे नुकसान वाले। लेकिन आप तो जानते हैं कि फायदा-नुकसान वह किसकी सत्ता है? वह आपकी सत्ता नहीं है! आपको तो जिनसे सत्संग मिलें वे ही संयोग पसंद करने योग्य हैं! अन्य सभी संयोग, वे तो संयोग ही हैं। अरे, सब से बड़े तो रात-दिन साथ ही रहने वाले संयोग, मन-वचन-काया

के संयोग, वे ही दुःखदाई हो गए हैं, तो फिर और कौन सा संयोग सुख देगा? आपको तो, ये संयोग छोड़ें ऐसा नहीं है लेकिन वहाँ पर समभाव से निकाल करना है! इसमें कैसा है कि जैसे-जैसे विपरीत संयोग बढ़ते हैं वैसे-वैसे यह ज्ञान अधिक विकसित हो ऐसा है। फिर भी, विपरीत संयोग खरीद कर लाने जैसा नहीं है, जो है उसका निकाल कर देना है।

जगत् में संयोग सार निकालने के लिए हैं, एक्सपिरियन्स (अनुभव) करने के लिए है लेकिन लोग विषम परिस्थिति में फँस गए हैं। शादी करके ढूँढते हैं कि सुख किसमें है? पत्नी में है? बच्चे में है? ससुर में है? सास में है? किसमें सुख है? उसका सार निकाल न! लोगों को द्वेष होता है, तिरस्कार होता है लेकिन सार नहीं निकालते। इस संसार के रिश्ते रिलेटिव संबंध हैं, रियल नहीं हैं। सिर्फ सार निकालने के लिए हैं रिश्ते! सार निकालने वाले लोगों को कम राग-द्वेष होते हैं और वह मोक्षमार्ग का शोधक बन जाता है।

व्यवस्थित शक्ति बढ़ाए समता

ज्ञान तो लिया है लेकिन अभी भी संसार तो है ही और उसमें पसंद-नापसंदगी रहेगी ही लेकिन 'व्यवस्थित' का ज्ञान है इसलिए समता से निकाल करना है। अनिष्ट संयोगों का नया उपाजन किए बिना निकाल करना है। चंदूभाई नाम वह संयोग, चंदूभाई का शरीर वह भी संयोग, चंदूभाई की वाणी भी संयोग। इन संयोगों का वियोग हो जाएगा।

इस ज्ञान के मिलने के बाद नए पर्याय अशुद्ध नहीं होते, पुराने पर्यायों को शुद्ध करना है और समता रखनी है। समता यानी वीतरागता। ताकि नए पर्याय नहीं बिगड़ें, नए पर्याय शुद्ध ही रहें। जो पुराने अशुद्ध पर्याय हैं, उनका शुद्धिकरण करना है। हमारी आज्ञा में रहने से उनका शुद्धिकरण हो जाएगा और समता में रहना है।

जितना समताभाव आया तो समझो उतना ही अहंकार चला गया। उतना ही उघाड़ होगा। संपूर्ण समता आने पर, संपूर्ण उघाड़ हो जाएगा।

- जय सच्चिदानंद

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

- 1. Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
- 2. Periodicity of Publication :** Monthly
- 3. Name of Printer :** Amba Offset, **Nationality :** Indian,
Address : B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar - 382025.
- 4. Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
- 5. Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above.
- 6. Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
Address : same as above.

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

sd/-

Date : 15-03-2018

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

क्या आपको दुःख है ?

प्रश्नकर्ता : हमने बड़ी प्रामाणिकता से नौकरी की है, फिर भी आजकल हमारे सिर पर परेशानियों बहुत हैं, कभी कभी रात को नींद भी नहीं आती। आप कुछ रास्ता दिखाइये।

दादाश्री : अरे, किस लिए परेशानियों की चिंता रखकर फिरते हो ? सारी दुनिया की परेशानियाँ सिर पर रख लीं, यह तो ओवरवाइजनेस है। **Come to the wiseness !** और बोलो कि 'हमें कोई तकलीफ नहीं। हमारे जैसा कोई सुखी आदमी नहीं है।' रात को थोड़ी खिचड़ी और थोड़ी सब्जी मिली तो फिर सारी रात चैन से सो पायेंगे। आपने प्रामाणिकता से सर्विस की है, फिर आपके पास भगवान का सर्टिफिकेट है, नहीं तो इस काल में ऐसा सर्टिफिकेट कहाँ से लायें। देखो न, फिर भी सिर पर कितना बोझ लेकर फिरते हो ! अब घर जा कर औरत को, बच्चों को बोल दो कि, 'अपने को भगवान ने बहुत दिया है और अपने को बहुत सुख है।' ऐसा बोलकर सब साथ में आराम से चाय पिओ। ये दुनिया अपनी ही है!!

सुख भी क्रीमती है और दुःख भी क्रीमती है। मुफ्त में तो किसी को सुख भी नहीं मिलता है और दुःख भी नहीं मिलता है। दुःख की क्रीमत देनी पड़ती है फिर दुःख मिलता है। हमने क्रीमत भरी नहीं है, इसलिए हमको दुःख आता नहीं है। ये क्रोध, मान, माया, लोभ सब आपके पास तैयार हैं, इसलिए तुम वे भर देते हो, हमारे पास ये कुछ नहीं है। हमको तो ये सुख भी नहीं चाहिये और दुःख भी नहीं चाहिये। ये सब कल्पित हैं। वह तो कल्पना की है आपने। कोई आदमी बोले कि हमको लड्डू ठीक नहीं लगता है, तो उसको अच्छा नहीं लगेगा। और तुमको लड्डू ठीक लगता है, तो तुमको अच्छा लगेगा। तुमने कल्पना की तो तुमको अच्छा लगता है। आपने आत्मा का आनंद इसमें डाला, तो फिर आनंद लगा। किसी चीज में जो आनंद होता नहीं है, वो तो आपने कल्पना की, उसकी करामात है। बाहर की किसी भी चीज में आनंद नहीं है। आनंद तो, अपने खुद के अंदर ही है। खुद के स्वरूप में ही आनंद है।

रीयली स्पीकिंग (वास्तव में), इस दुनिया में दुःख और सुख नहीं है। 'हमें यह दुःख है, वह दुःख है' वह सब **By relative view point** से है, सिर्फ कल्पना है। आप बोलें कि, 'हम पैसे की रिश्तत नहीं लेते।' इसमें ही हमको सुख है। और दूसरा बोलता है कि 'पैसे की रिश्तत लेने में हमको सुख है।' वो **Relative view point** है, **not Real view point** !

जब तक भौतिक सुख प्रिय है, तब तक भगवान नहीं मिलते हैं। हमको भौतिक सुख नहीं चाहिये, ऐसा यदि तय कर लिया तो भगवान मिल जाते हैं। हम भी खाते-पीते हैं मगर हमको नहीं चाहिये, फिर भी ऐसे ही आ जाता है। हमको अपना खुद का सुख मिला, फिर ओर क्या चाहिये ? खुद का बहुत सुख आ जाये, उसको सनातन सुख बोला जाता है। अतीन्द्रिय सुख का किंचित्मात्र टेस्ट (स्वाद) कर लिया तो दूसरा सब इन्द्रिय सुख फीका लगेगा। अतीन्द्रिय सुख नहीं मिले, तब तक इन्द्रिय सुख अच्छा लगता है। इन्द्रिय सुख रिलेटिव सुख है।

सच्चा सुख किसको बोला जाता है कि जो सनातन है। एक बार आया तो फिर कभी जाता ही नहीं। हम अभी आधि में हैं, व्याधि में हैं कि उपाधि में हैं ?

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

18-22 जनवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में पाँच दिवसीय वार्षिक MMHT शिविर का आयोजन हुआ जिसमें 2600 महात्मा भाईयों ने हिस्सा लिया। शिविर का मुख्य टॉपिक था- 'होता है ज्ञान प्रेक्टिकल सेवा से'। इस टॉपिक पर पूज्यश्री द्वारा दो सत्संग व ब्रह्मचारी भाईयों द्वारा सुंदर नाटक प्रस्तुत किया गया। पूज्यश्री द्वारा पहले दो दिन ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण व प्रश्नोत्तरी भी हुए। पूज्यश्री की भावना के अनुसार सेवार्थी व कोर्डिनेटरों को विशेष लाभ प्राप्त हों उस हेतु से तीन अलग-अलग ग्रुप में सत्संग का आयोजन हुआ। शिविर के दौरान सभी महात्माओं के लिए आप्तपुत्र द्वारा विशेष सत्संग, GD व व्यक्तिगत मार्गदर्शन मिले उस हेतु से सहायता केन्द्र भी रखा गया। रात्रि सेशन में सामायिक, गरबा, ज्ञानवाणी ऑडियो व नाटक जैसे कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

24-28 जनवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में महात्मा बहनों के लिए पाँच दिवसीय WMHT शिविर आयोजित हुई, जिसमें 5200 बहनों ने हिस्सा लिया। WMHT शिविर का मुख्य टॉपिक भी 'होता है ज्ञान प्रेक्टिकल सेवा से' था। पूज्यश्री द्वारा पहले दो दिन ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण व प्रश्नोत्तरी और बाकी के तीन दिन 'सेवा' टॉपिक पर सत्संग हुए। सेवार्थी बहनों व कोर्डिनेटरों के लिए भी तीन अलग-अलग ग्रुप में सत्संग का आयोजन हुआ। रात्रि सेशन के दौरान सामायिक, गरबा व ब्रह्मचारी बहनों द्वारा 'सेवा' टॉपिक पर नाटक प्रस्तुत हुआ। आप्तपुत्री बहनों द्वारा व्यक्तिगत मार्गदर्शन भी दिया गया। उसके अलावा सत्संग की शुरुआत में ज्ञान बूस्टर वीडियो भी दिखाए गए व दो एक्टिविटी सेशन भी हुए।

5-7 फरवरी : आनंद में चार साल के लंबे अरसे के बाद पूज्यश्री की निश्रा में ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। ज्ञानविधि से पहले और बाद में, आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन हुआ। उससे पहले प्रोजेक्टर शो व आप्तपुत्र सत्संग द्वारा ज्ञान लेने के लिए प्रसार हुआ। पूज्यश्री के आगमन के दौरान स्थानीय महात्माओं को स्वागत, सेवार्थी सत्संग के दौरान पूज्यश्री के दर्शन व पूज्यश्री के साथ मोर्निंग वॉक का लाभ प्राप्त हुआ। 550 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

7-9 फरवरी : गोधरा त्रिमंदिर संकुल में आयोजित ज्ञानविधि में 1150 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। यहाँ पर भी ज्ञानविधि से पहले और बाद में आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन हुआ था। स्थानीय महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ गोधरा स्पोर्ट्स संकुल के ट्रेक पर मोर्निंग वॉक व सत्संग का आनंद उठाया। गोधरा त्रिमंदिर में पूज्यश्री ने सभी भगवानों के भावपूर्ण दर्शन भी किए व स्थानीय महात्माओं व सेवार्थियों को सत्संग और दर्शन का लाभ भी प्राप्त हुआ।

10-12 फरवरी : बड़ौदा के त्रिमंदिर में पूज्यश्री ने दर्शन किए व त्रिमंदिर संकुल में निर्मित स्टॉप एन स्टे, डोरमेटरी, उणोदरी भवन, व फूड कोर्ट का उद्घाटन भी किया। YMHT के बच्चों ने, दादा भगवान जैसा कोट और हार पहना कर पूज्यश्री का स्वागत बड़ौदा के राजा की तरह किया। बड़ौदा के समा क्षेत्र में आयोजित कार्यक्रम के पहले दिन पूज्यश्री द्वारा 'स्वार्थ-परमार्थ' टॉपिक पर सत्संग व जनरल प्रश्नोत्तरी हुए। ज्ञानविधि में 950 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग में 550 महात्माओं ने पूज्यश्री के सत्संग, दर्शन व 'दादा दरबार' के अंतर्गत, व्यक्तिगत मार्गदर्शन का लाभ प्राप्त किया।

12-19 फरवरी : पूज्यश्री की निश्रा में मुंबई में तीन जगहों पर ज्ञानविधि का आयोजन हुआ, जिसमें वाशी और मीरा रोड में पहली बार ज्ञानविधि हुई थी। यहाँ पर ज्ञानविधि से पहले और बाद में आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन हुआ था। वाशी में 750 और मीरा रोड में 850 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। विले पार्ले के लिए ज्ञानविधि से पहले (1) 'इमोशन से सहजता की ओर' (2) 'ज्ञानी की दृष्टि से सर्टिफाइड फादर-मदर' टॉपिक पर सत्संग रखे गए। दूसरे दिन सत्संग की शुरुआत में GNC के बच्चों ने सुंदर प्रेजेंटेशन किया। स्थानीय महात्माओं को पूज्यश्री का नजदीक से टच प्राप्त हुए उस हेतु से वाशी, बोरिवली और जूहू बीच के महात्मा पूज्यश्री के साथ मोर्निंग वॉक के लिए जुड़ गए। ज्ञानविधि के बाद में आप्तपुत्र सत्संग से नए महात्माओं को बहुत सारी नई ज्ञान की बातें जानने मिली। मुंबई और थाना के महात्माओं के लिए वाशी, बोरिवली व पार्ला में सेवार्थी सत्संग व पूज्यश्री के दर्शन का आयोजन हुआ।

दादावाणी

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	+	'साधना' टीवी पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
	+	'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
	+	'दूरदर्शन'-गिरनार हर रोज पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
	+	'अरिहंत' पर हर रोज सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
USA-Canada	+	'TV Asia' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
	+	'SAB-US' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 EST
UK	+	'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
	+	'SAB-UK' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
	+	'Rishtey-UK' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
Singapore	+	'SAB- International' पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)
Australia	+	'SAB- International' पर हर रोज सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)
New Zealand	+	'SAB- International' पर हर रोज दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	+	'दूरदर्शन'-नेशनल पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
	+	'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
	+	'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
	+	'उड़ीसा प्लस' टीवी पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
	+	'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
	+	'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
	+	'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात 8 से 9 (गुजराती में)
	+	'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
	+	'दूरदर्शन'-चंदना पर सोम से शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
USA -Canada	+	'Rishtey-USA' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST
UK	+	'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
Singapore	+	'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
Australia	+	'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
New Zealand	+	'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE	+	'Rishtey-Asia' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)
USA-UK-Africa-Aus.	+	'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

महाराष्ट्र

नागपुर	दिनांक : 24 मार्च	समय : शाम 6-30 से 8-30	संपर्क : 9970059233
	स्थल : श्री कच्छी विशा ओशवाल भवन, अनाथ विद्यार्थी गृह, लकडगंज, नागपुर.		
अमरावती	दिनांक : 25 मार्च	समय : शाम 5 से 7-30	संपर्क : 9422335982
	स्थल : दादा भगवान सत्संग केन्द्र, अंबुजा सीमेंट ऑफिस, कॉर्पोरेशन बैंक के निचे, राजापेट, अमरावती.		
अकोला	दिनांक : 28 मार्च	समय : शाम 4-30 से 6-30	संपर्क : 9422403002
	स्थल : ऑफिसर क्लब, सिविल लाइन, एस. ए. कोलेज के सामने, अकोला.		
जलगाँव	दिनांक : 29 मार्च	समय : शाम 5 से 7-30	संपर्क : 8806869874
	स्थल : ओमकार रिसोर्ट्स, DSP चौक, HDFC बैंक के पास, महाबल रोड, जलगाँव.		

दादावाणी

औरंगाबाद	दिनांक : 31 मार्च	समय : शाम 5-30 से 7-30	संपर्क : 8308008897
स्थल : प्लाट नंबर-74, N3, CIDCO, हाईकोर्ट के पास, जालना रोड, औरंगाबाद.			
नासिक	दिनांक : 1 अप्रैल	समय : शाम 5-30 से 7-30	संपर्क : 9325074635
स्थल : आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी, नासिक.			
मध्यप्रदेश			
उज्जैन	दिनांक : 28 मार्च	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 9425195647
स्थल : गुजराती समाज धर्मशाला, नई सड़क, देना बैंक के पास, उज्जैन.			
इन्दौर	दिनांक : 29 मार्च	समय : शाम 7 से 9	संपर्क : 8319971247
स्थल : 'दादा दर्शन', 89-B टंकी हॉल मेडन रोड, राजेन्द्र नगर रेलवे स्टेशन के पास, इन्दौर.			
इन्दौर	दिनांक : 30 मार्च	समय : शाम 7 से 9	संपर्क : 9993534245
स्थल : 90-B अनूप नगर, रिक्शा स्टैंड वाली गली, LIG चौरहे के पास, CHL अपोलो हॉस्पिटल के सामने, इन्दौर.			
भोपाल	दिनांक : 31 मार्च	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 9826926444
स्थल : जनक विहार कॉम्प्लेक्स, तीसरा माला, मेडीस्कैन सेंटर के ऊपर, एयरटेल ऑफिस के सामने, मालविया नगर, भोपाल.			
भोपाल	दिनांक : 1 अप्रैल	समय : शाम 4 से 7	संपर्क : 9826926444
स्थल : सभागार पशुपालन ट्रेनिंग सेंटर, MANIT चौक के पास, सुरुचि नगर के सामने, लिंक रोड न.1, भोपाल.			
उत्तराखंड			
काशीपुर	दिनांक : 30 मार्च	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9457635398
स्थल : योग भवन, तीर्थ द्रोण सागर, बाजपुर रोड, काशीपुर.			
हल्द्वानी	दिनांक : 31 मार्च	समय : दोपहर 1-30 से 4-30	संपर्क : 9911142455
स्थल : शिव मंदिर, गांव चांदनी चौक, पंचायत घर के पास, रामपुर रोड, हल्द्वानी.			
उत्तर प्रदेश			
बरेली	दिनांक : 1 अप्रैल	समय : दोपहर 3 से 7	संपर्क : 9837149162
स्थल : बाबा त्रिवेदीनाथ मंदिर, हाईवे -37, B.D.A. कॉलोनी, बरेली.			
गोरखपुर	दिनांक : 2 अप्रैल	समय : शाम 5 से 8	संपर्क : 7800656738
स्थल : श्री राधेश्याम निषाद, EWS-29, शास्त्री नगर कालोनी, राजेंद्रनगर के पास, गोरखनाथ, गोरखपुर.			
गोरखपुर	दिनांक : 3 अप्रैल	समय : शाम 5 से 8	संपर्क : 9935949099
स्थल : श्री दीपचन्द निषाद, ग्राम कोडरीकला, पोस्ट भीठी रावत, थाना सहजनवा, गोरखपुर.			
लखनऊ	दिनांक : 7 अप्रैल	समय : सुबह 10 से 12	संपर्क : 8090177881
स्थल : राधा कृष्णा मन्दिर, चित्रगुप्त नगर, आलमबाग, लखनऊ.			
आगरा	दिनांक : 8 अप्रैल	समय : सुबह 10 से 1	संपर्क : 9258744087
स्थल : यूथ हॉस्टल, मरीना होटल के सामने, हरिपर्वत क्रोसिंग के पास, आगरा.			
त्रिपुरा			
दक्षिण त्रिपुरा	दिनांक : 5 अप्रैल	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 9436902835
स्थल : शांती बाजार योग भवन, दक्षिण त्रिपुरा.			
गोमती	दिनांक : 6 अप्रैल	समय : सुबह 8 से 10	संपर्क : 9436902835
स्थल : उदयपुर टाउन हॉल, गोमती, त्रिपुरा.			
अगरतला	दिनांक : 6 अप्रैल	समय : शाम 4 से 6	संपर्क : 7005338858
स्थल : अगरतला - योग सेंटर, बेनर्जी परा.			
पश्चिम बंगाल एवं आसाम			
कोलकाता	दिनांक : 1 अप्रैल	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 9830131411
स्थल : 12/1/2B, सनफ्लावर अपार्टमेंट, राज रेस्टोरेन्ट के निकट, मनोहर पुकुर रोड, कोलकाता.			
गुवाहाटी	दिनांक : 8 अप्रैल	समय : सुबह 10 से 12	संपर्क : 8486363944
स्थल : स्वस्तिक एन्क्लेव, पाथरकुची रोड, बसिस्थ चारआली, गुवाहाटी.			

दादावाणी

गुवाहाटी दिनांक : 8 अप्रैल समय : शाम 4 से 6 संपर्क : 8486363944
स्थल : श्री जलाराम मंदिर, काली मंदिर के पास, ए.के. देव रोड, फतासिल आमबाड़ी, गुवाहाटी.

छत्तीसगढ़

भिलाई दिनांक : 5 अप्रैल समय : शाम 5 से 7 संपर्क : 9827481336
स्थल : दादा भगवान सत्संग केन्द्र, मरोदा वाटर टैंक, मैत्री गार्डन चौक, भिलाई.

रायपुर दिनांक : 8 अप्रैल समय : सुबह 10 से 5 संपर्क : 9329523737
स्थल : दादा भगवान सत्संग केन्द्र, अशोक विहार कॉलोनी के आगे, रिंग रोड, गोंद्वारा, रायपुर.

झारखंड

रांची दिनांक : 8 अप्रैल समय : शाम 4 से 6-30 संपर्क : 8092543226
स्थल : अशोक नगर देवालय एवं चिंतन स्थल, गेट नं 1 एवं 2, रांची.

बोकारो दिनांक : 9 अप्रैल समय : दोपहर 3 से 5 संपर्क : 7765045788
स्थल : राम रूद्र हाई स्कूल, जोधादिह मोड, मेन रोड, चास, बोकारो.

बिहार

कटिहार दिनांक : 11 अप्रैल समय : दोपहर 3 से 6 संपर्क : 9430928282
स्थल : सामुदायिक भवन, बड़ी दुर्गा मंदिर, कटिहार.

गया दिनांक : 11 अप्रैल समय : शाम 4 से 6 संपर्क : 9835623307
स्थल : संजय नगर, (छोटी नवादा), लेप्रोसी हॉस्पिटल के पास, श्री अमरेंद्र कुमार, गया.

पूर्णिया दिनांक : 12 अप्रैल समय : दोपहर 3 से 6 संपर्क : 7488744604
स्थल : तेरापंथ भवन, गुलाब बाघ, पूर्णिया.

नवादा दिनांक : 12 अप्रैल समय : शाम 4 से 6 संपर्क : 7654057901
स्थल : दुर्गा स्थान, बिजली ऑफिस के सामने, गया रोड, नवादा.

आरा दिनांक : 13 अप्रैल समय : शाम 4 से 6 संपर्क : 8651373770
स्थल : एस.एन कोम्प्लेक्स, सुधा डेरी के सामने, कतीरा, आरा.

सहरसा दिनांक : 13 अप्रैल समय : शाम 4 से 7 संपर्क : 9534797720
स्थल : होटल राजमित्रा, रेल्वे स्टेशन के पास, चांदनी चौक, सहरसा.

मुजफ्फरपुर दिनांक : 14 अप्रैल समय : दोपहर 2 से 5 संपर्क : 9608030142
स्थल : ईडियन रेड क्रॉस सोसाइटी, कंपनी बाग रोड, मुजफ्फरपुर.

वैशाली दिनांक : 14 अप्रैल समय : दोपहर 2 से 5 संपर्क : 9708234981
स्थल : शारदा सदन पुस्तकालया, लालगंज, वैशाली.

पटना दिनांक : 15 अप्रैल समय : सुबह 10 से 5 संपर्क : 7352723132
स्थल : महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड, दिनकर गोलम्बर के पास, राजेंद्र नगर, पटना.

चंडीगढ़ में पंजाब, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के महात्माओं के लिए आप्तपुत्र के साथ विशेष शिविर

तारीख - 27 से 29 अप्रैल, रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क -9779233493

स्थल: बाबा मक्खन शाह लुबाना भवन, सेक्टर 30, चंडीगढ़

शिविर का खर्च रु. 1000 (रु. 600 ठहरने का और रु. 400 भोजन का)

31 मार्च तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 10 अप्रैल तक रजिस्ट्रेशन ट्रांसफर या कैंसल कर सकते हैं।

राजस्थान

पाली दि : 6-7 अप्रैल संपर्क : 9461251542 **अजमेर** दि : 13-14 अप्रैल संपर्क : 8955846534

जोधपुर दि : 8-9 अप्रैल संपर्क : 8875020423 **जयपुर** दि : 15-16 अप्रैल संपर्क : 8233363902

जैतारण दि : 10 अप्रैल संपर्क : 9413172239 **टोंक** दि : 17 अप्रैल संपर्क : 9314788352

भीलवाड़ा दि : 11 अप्रैल संपर्क : 9214966424 **कर्णाटक** **बेंगलुरु** दि : 24-25 अप्रैल संपर्क : 9590979099

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

Pujya Deepakbhai's UK - Germany Satsang Schedule (2018)

UK: + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org, Germany: +49 700 32327474

Date	From	to	Event	Venue
06-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Shree Prajapati Association, Ulverscroft Road, Leicester , LE4 6BY
07-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	PMHT Satsang with Aptaputra	
07-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
08-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
08-Apr-18	03:00 PM	07:30 PM	GNAN VIDHI	
09-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Birmingham Pragati Mandal, 10 Sampson Road, Sparbrook, Birmingham , B11 1JL
10-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
10-Apr-18	06:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
13-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	Harrow Leisure Centre, Christchurch Avenue, Harrow , HA3 5BD
14-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	PMHT Satsang with Aptaputra	
14-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
15-Apr-18	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satsang	
15-Apr-18	03:00 PM	07:30 PM	GNAN VIDHI	
16-Apr-18	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
20-22 Apr	All day		Akram Vignan Event	Willingen, Germany

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में अडालज त्रिमंदिर में आगामी सत्संग कार्यक्रम

PMHT (पेरेंट्स महात्मा) शिविर

9-13 मई (बुध - रवि) - सत्संग समय की घोषणा बाकी

9 मई (बुध) - पूज्यश्री के जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) इस शिविर में 'मा-बाप बच्चों का व्यवहार', 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' तथा 'पैसों का व्यवहार' टोपिक पर पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा सत्संग होगा तथा आप्तपुत्र भाईयों तथा आप्तपुत्री बहनों द्वारा गुरु सत्संग किए जाएंगे। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। अगर आपके मोबाइल में FMकी सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकेंगे। 3) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज्दिकी सेन्टर में और अगर नज्दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 6) पर 19 अप्रैल 2018 तक अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

सेवार्थी शिविर

1-3 जून (शुक्र - रवि) - सत्संग समय की घोषणा बाकी

सूचना : अडालज में हो रही इस शिविर में नीचे बताए गए महात्मा जुड़ सकते हैं।

अपने सत्संग सेन्टर में साल भर नियमित सेवा देनेवाले या फिर जन्म जयंती, प्राणप्रतिष्ठा जैसे बड़े कार्यक्रम में सेवा दी हो, ऐसे महात्मा। इस शिविर में भाग लेने हेतु रजिस्ट्रेशन की सूचना बाद में घोषित की जाएगी।

सुरत

19 मई (शनि) रात 8 से 11 - सत्संग (टोपिक-वाणी के झगडे मिटाये समझ से)

20 मई (रवि) शाम 7-30 से 11 - ज्ञानविधि

21 मई (सोम) रात 8 से 11 - आप्तपुत्र सत्संग

संपर्क : 9574008007

स्थल : श्री आत्मानंद सरस्वती विद्या संकुल (धारुका कोलेज), कापोद्रा पुलिस स्टेशन के सामने, वराछा रोड, सुरत.

वापी

21 व 23 मई (सोम व बुध) शाम 7 से 10 - आप्तपुत्र सत्संग तथा 22 मई (मंगल) शाम 6-30 से 10 - ज्ञानविधि

स्थल : VIA ग्राउन्ड, GIDC चार रस्ता, वापी, जि- वलसाड (गुजरात).

संपर्क : 9924343245

पसंद-नापसंद संयोग आखिरकार वियोगी स्वभाव वाले है

मनपसंद संयोग को पकड़ना चाहें तब भी पकड़ा नहीं जा सकता और नापसंद संयोग को भगाना चाहे तब भी भगाया नहीं जा सकता। अतः निश्चिंत रहना। संयोग अपने काबू में नहीं हैं। घर में कोई अनचाहा आ जाए और वह जाए नहीं तब भीतर नापसंदगी बनी रहती है और पसंद वाला आए तो, 'नहीं, दो दिन बाद जाना। मत जाओ, मत जाओ' कहते हैं फिर भी व्यवस्थित उसे ले जाता है। 'व्यवस्थित' के हिसाब में आ चुका होगा तो उसे कोई निकाल नहीं सकेगा। अतः 'व्यवस्थित' में जो हो सो भले हो। संयोग खुद ही वियोगी स्वभाव वाला है। अतः ज्ञाता-दृष्टा रहेंगे तो इटसेल्फ उसका वियोग हो जाएगा। इसमें आत्मा का कोई कर्तव्य नहीं रहता। वह मात्र ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में रह सकता है। संयोग इच्छित हों या अनिच्छित, उनका वियोग हो जाता है।

- दादाश्री

